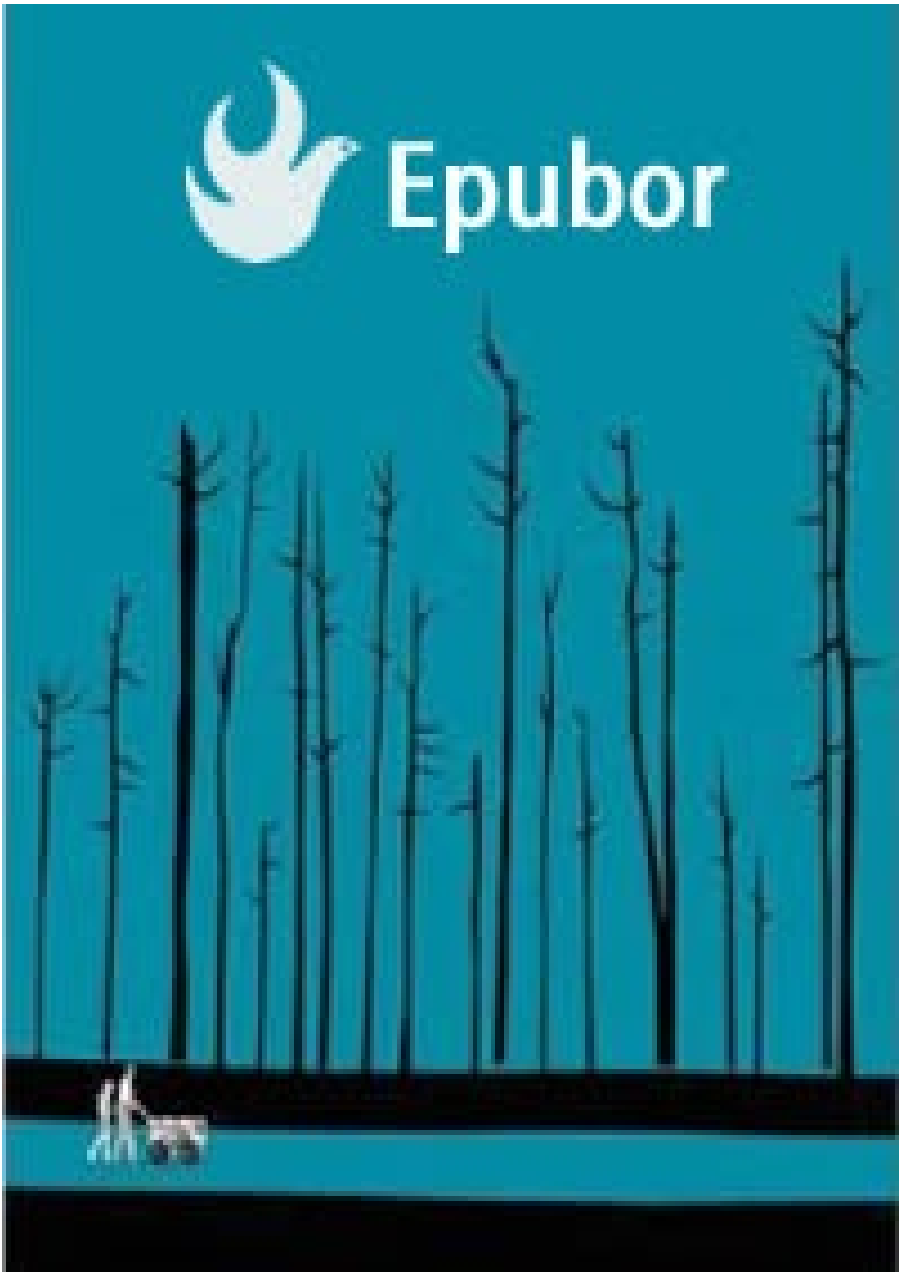
Epubor

इश्क में शहर होना

फ़ेसबुक फ़िक्शन : लप्रेक

रवीश कुमार

चित्रांकन
विक्रम नायक

सार्थक
राजकमल प्रकाशन का उपक्रम

ISBN : 978-81-267-2767-4

© रवीश कुमार

© रेखा च : व म नायक

पहला सं करण : जनवरी 2015

पहली आवृ : फरवरी 2015

सरी आवृ : अ ैल 2015

काशक

राजकमल काशन ा. ल.

1-बी, नेताजी सुभाष माग, द रयागंज

नई द ली-110 002

शाखाएँ

अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006 पहली मं ज़ल, दरबारी ब डंग, महा मा गांधी माग, इलाहाबाद-211 001 36 ए, शे स पयर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com

ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

मु क

सा टोपैक ाइवेट ल मटेड

ए-104/2, फ़ेज़ 2, ओखला इंड यल ए रया, नई द ली-110 020

ISHQ MEIN SHAHAR HONA

Nano Stories by Ravish Kumar

Illustrations by Vikram Nayak

इस पु तक के सवा धकार सुर त ह। काशक क ल खत अनुम त के बना इसके कसी भी अंश क फोटोकापी एवं रकॉ डग स हत इले ॉ नक अथवा मशीनी, कसी भी मा यम से अथवा ान के सं हण एवं पुन योग क णाली ारा, कसी भी प म, पुन पा दत अथवा संचा रत- सा रत नह कया जा सकता।

नयना के लए

अनु म

शहर का कताब बनना

एक नया शहर-सी

होना, संग होना फर- फर...

लव ए ज़ाम नोट् स घूमी फरी, उ फ़!

कुछ तेरा-सा, कुछ मेरा-सा

खाप कह आसपास

ज़ोर लगा के, ज़ दगी!

अब आपक बारी...

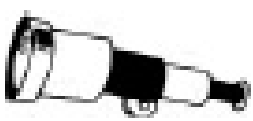

शहर का कताब बनना

ह मने शहर को हमेशा गाँव क नज़र से देखा है। जहाँ जाकर लोग गाँव को भूल जाते ह। शहर मेरी ज़ दगी म गाँव बनाम शहर के प म आया। तब तक शहर हमारे लए एक अ थायी पता-भर था। हम ‘ थायी पता’ के कॉलम म गाँव का पता भरते थे। शहर के डेरे का नह । हर मौक़े पर बहार क राजधानी पटना से मो तहारी ज़ले के गाँव

जतवारपुर लौटना होता था। हर व त घर और डेरा का फ़क़ बना रहता था। घर मतलब

गाँव, डेरा मतलब शहर।

जब भी गाँव लौटकर आना होता था, उलाहन क पूरी सीरीज़ तैयार होती थी। बड़े-

बुजग कहते थे क गाँव ही अपना है। यही तु हारा वजूद है। गाँव को ही जानो-पहचानो। शहर तो तु ह बगाड़ रहा है। गाँव ही बनाएगा। गाँव ही बचाएगा। हम भी ख़ुद को बचाकर रखते थे क कोई पूरी तरह शहरी न समझ ले। पूरी को शश करते थे क शहर न हो जाएँ। शहर होने का मतलब गाँव से व ासघात। उस ज़मीन से धोखा जसे मेरे पुरख ने स चा था। अपना खेत और पेड़ न पहचानने पर बाबूजी से डाँट पड़ जाती थी। ऐसा लगता था क मेरे आस-पास क नया मुझे शहर

से बचाकर रखना चाहती थी ले कन म गाँव को बचाए रखते ए शहर को खोजना चाहता था।

गाँव से शहर लौटने पर घर से बाहर नकलने क तमाम नई ब दश लागू हो जाती

थ । सूरज डूबने से पहले घर आ जाना है। ब त र के कसी मोह ले म यारी-दो ती के

लए नह जाना है। सनेमा जाने क छूट इस शत के साथ मलती थी क शाम से पहले

आ जाना है। देर रात क फ़ म नह देखनी ह। बुरे च र वाले ही इतनी रात तक सनेमा देखते ह। कोई साइ कल छ न लेगा तो कोई भगा ले जाएगा। दोपहर म दरवाज़े-

खड़ कयाँ सब ब द हो जाती थ । 'ह बूराबी' के नयम जैसा बन गया था क बाबूजी के

लौटने से पहले सबको लौट आना है। गाँव म ऐसा कोई नयम नह था। इस लए हमने बचपन म गाँव को ख़ूब खोजा है। वहाँ ग़ैर का भी अपना होता था और शहर म सफ़ अपना ही अपना होता है।

शायद ये मेरी माँ क असुर ा क भावना ही रही होगी क एक अनजान शहर म कोई

उसके ब च को उठा न ले जाए। इस लए वह ब चा उठानेवाले धरकोसवा क कहानी सुनाती थी जो मुँह ब द कर ब चे को बोरे म कस देता था। माँ क यह असुर ा सही भी थी। उसके जीवन म भी कोई शहर पहली बार आया था। ब त छोटा था जब दो त के साथ खेलते-खेलते भटक गया। काफ़ खोजबीन ई। दोपहर तक जब घर नह लौटा तो माँ म दर-म दर भटकने लगी।

बाद म एक जैन म दर म मल गया। मुझे घर का पता नह मालूम था, इस लए

म दरवाले ने अपने यहाँ रख लया था। माँ आज तक जैन म दर का शु या अदा करती है। कहती है क आजकल के साधु होते तो तु ह ग़ायब ही कर देते। गाँव म घर नह खोता है ले कन शहर म खो सकता है। हम रोज़ अलग-अलग शहर म कई बार लौटते ए घर का रा ता भटक जाते ह। घर खो जाता है।

धीरे-धीरे म धरकोसवा कहानी क ेत-छाया से आज़ाद होने लगा। कसी दोपहर

अनजान गली या मोह ले क तरफ़ चला जाता। सफ़ देखने और पहचानने क ये मेरे शहर का ह सा है। य ये मोह ला मेरे मोह ले से अलग है? भटकने क इस आदत ने मुझे शहर का होना बनाना शु कया।

पटना एक रह य बना रहा मगर उसके कई राज़ मने जान लये। गांधी सं हालय के

पीछे पीपल के पेड़ के नीचे बैठ गंगा को ख़ूब नहारा करता। र नाव से आती आवाज़ को सुनकर ज़ दगी के त रोमांच जाग जाता। ग णत म फ़ेल होने क यातना से मु का अ यास मुझे कई बार गंगा के इस एका त म ले गया। यही वह ल हे थे जनम म बना

कसी को बताए शहर को जीने लगा। जैसे ही घर लौटता सारा माहौल ऐसा हो जाता क

घर म कसी शहर को आने नह देना है। हम शहर म गाँव के लए रहते थे।

शहर म शहर के लए होना सखाया द ली ने। ले कन 'इलेवन अप' ेन से उतरते

ही द ली का व तार देख सहर गया। पहली ही नज़र म द ली से डर गया। फ़ म म देखा था क कैसे गाँव से आकर दलीप कुमार मु बई क सड़क के बीचोबीच घर जाते ह। कई बार द ली के ए स के चौराहे पर प ँचकर ऐसा ही लगता। डीट सी बस न बर एक नया पता बन गया। हमने उन न बर को पहचान लया जो मुझे गो व दपुरी क तरफ़ ले जाते थे।

धीरे-धीरे समझने लगा क इतना बड़ा शहर यानी पटना से भी यादा ख़ज़ाना! म

द ली आकर वही करने लगा जो पटना म कया करता था। दोपहर म चलने लगा। मने

दोपहर के व त इस शहर क कई ग लय और मोह ल क या ा क है। पर सफ़ देखना होता था। घर क बालकनी म वा शग मशीन और नाइट या मै सी गाउन म औरत को कपड़े साफ़ करने का य ही मेरे ज़ेहन म द ली बनकर उतरा। ग़ा लब और इं डया गेट बाद म आए। ब क आज तक ठ क से नह आए। इतनी बड़ी सं या म दोपहर के व त नाइट पहनकर औरत को घूमते नह देखा था। पटना म नाइट का आगमन तो आ था मगर चलन नह था। पटर होता तो नाइट पर द ली को पट करता।

नयना से दो ती ने इस शहर को एक कताब म बदल दया। ब क म इस शहर के

लए बदल गया। हम ेम म ख़ूब भटके ह। वदा होने से पहले कुछ और बात कर लेने क

बेचैनी ने ख़ूब पैदल चलाया। द ली भी साथ-साथ चलती थी। द ली का अजनबीपन रोमांस का सबसे अ छा दो त है। गाँव क तरह यहाँ मुझे न कोई जानता था, न पहचानता था। ेम के इ ह पल म मने इमारत क ऐ तहा सकता को जाना है। मुग़ल आ कटे चर पर नयना के ल बे-ल बे ले चर सुने ह। जी, ेम म पढ़ना भी पड़ता है। बहस होती है। हम सफ़ ख़ुद को ही नह , शहर को भी प रभा षत कर रहे होते ह। आज भी 'लै पस लजली' (लाजवद) र न का नाम सुनते ही कबूतर क तरह गया व त फड़फड़ाने लगता है।

ले कन मेरी ज़ दगी म एक और श स इ तज़ार कर रहा था जसके पास नया-भर

के शहर थे। दवंगत इ तहासकार पाथसारथी गु ता। एम.ए. के दन म सुने ए शहरीकरण पर उनके ले चर मेरे लए आज भी गाइड का काम करते ह। हम सब उ ह पीएसजी बुलाते थे। उनक लास म कुछ तो ऐसा आ जससे मेरे लए द ली लोग क

द ली बन गई। इ तहासकार क द ली से नकलकर गो व दपुरी से लेकर भजनपुरा क द ली म भटकने लगा।

भजनपुरा के पास के इलाक़े म कसी दोपहर घूमने चला गया। हर घर म ा बन रहा

था। पहली बार मद हाथ को ा बनाते देखा। थान-थान ा को देखना भीतर से बाहर आने जैसा था। ऐसा घबराया क नज़र बचाकर भागने जैसा लौटने लगा। कई दन बाद उन ग लय म दोबारा लौटकर गया। हमने पतंग का माँझा बनते देखा था, जमशेदपुर म टाटा ट ल लांट म ट ल बनते देखा था। ा भी बनता है, पहली बार देखा। सबको ा बनते देखना चा हए। कशोर उ के ब त से लोग कपड़े म ज म देखा करते थे। कपड़े को कपड़ा समझने के लए उसका बनते देखना ज़ री है। यही करते-करते म कताब क द ली के बीच लोग क द ली का वक ल बन गया। द ली केवल

कॉफ़ -टेबल शहर नह है।

बस तब से शहर को कई तरह से जया है। ेम हम सबको बेहतर शहरी बनाता है।

हम शहर के हर अनजान कोने का स मान करने लगते ह। उन कोन म ज़ दगी भर देते ह। जैसे छठ के समय हमारे यहाँ कोसी भरा जाता है। खड़े ग े का घेरा बनाकर उसके बीच म कतना कुछ भर दया जाता है। आप तभी एक शहर को नए सरे से खोजते ह जब ेम म होते ह। और ेम म होना सफ़ हाथ थामने का बहाना ढूँढ़ना नह होता। दो लोग के उस पेस म ब त कुछ टकराता रहता है।

'ल ेक' उसी क शश और टकराहट क पैदाइश है। फ़ेसबुक पर 'ल ेक' का लखना

उसके सी मत पेस म ब त कुछ खोजना था। फ़ेसबुक हमारे लए एक नया शहर था।

ज़ दगी म ब त से लोग का एक झ का-सा आ गया। पहली बार क तरह सब एक सरे

को खोजने लगे। म उनके बीच शहर खोजने लगा। 'लघु ेम कथा' लखने लगा जसे

वनीत कुमार और ग र नाथ झा ने और भी बेहतर तरीक़े से बढ़ाया।

अब 'ल ेक' कताब क श ल म आपके हाथ म है। सुद त से बीस बार पूछ चुका

ँ क लोग को पस द आएगी या नह । शायद उसका भरोसा है क 'इ क़ म शहर हो

जाना' कताब बन गई है। सुद त के दो त स या क गारंट से म आ त तो हो गया, पर नवस ँ। सुद त और स या का शु या। वनीत का भी जससे म बराबर चेक करता रहा क सा ह यक बरादरी बुरा तो नह मानेगी। जतना लखते व त नह सोचा, उससे कह यादा कताब के बारे म सोच रहा ँ।

राजकमल काशन समूह को ध यवाद! उसके ब ध नदेशक ी अशोक महे री

का भी ध यवाद ज ह ने आ खरकार काशन क ज मेदारी ली।

दरअसल राजकमल के स पादक य नदेशक स यान द न पम क क पना से ही

इस कताब क शु आत ई। स यान द ने ही इस कताब के बारे म तरह-तरह से सोचा है। एक क़ा बल स पादक क तरह नया करने के लए जो खम उठाने क हद तक जाते रहे। उनका इतना भरोसा न होता तो कताब के लए 'हाँ' कहना आसान नह होता।

ह द काशन क नया म स यान द नया करने के लए जीते ह। ह द को कुछ नया

चा हए। 'ल ेक' जवाब है या नह , ले कन नया चा हए। ब त कुछ नया हो रहा है, ले कन बात पुरानी ही हो रही ह।

व म नायक के बना यह कताब नह बन पाती। व म का काम पहली बार म ही

पस द आ गया। इतना क हमने तय कया क कताब को लेकर मुलाक़ात नह करगे।

व म को भी इसम अपना शहर भरने क छूट होनी चा हए। ये कताब व म नायक क

भी है। दो लोग ने मुलाक़ात और बात के बना ही मलकर एक कताब लख द है।

शु या NDTV India और उसके लाल माइक का, जसने मुझे इतने सारे शहर को

देखने का मौक़ा दया।

मेरी बे टयाँ जब बड़ी होकर इस कताब को पढ़गी तो बस इतनी वा हश है क वे

भी अपना शहर आप ही खोज। त ी और ट पू का शहर। सबका अपना- अपना शहर हो और 'ल ेक' हो!

रवीश कुमार

15 जनवरी, 2015

नई द ली

एक नया शहर-सी

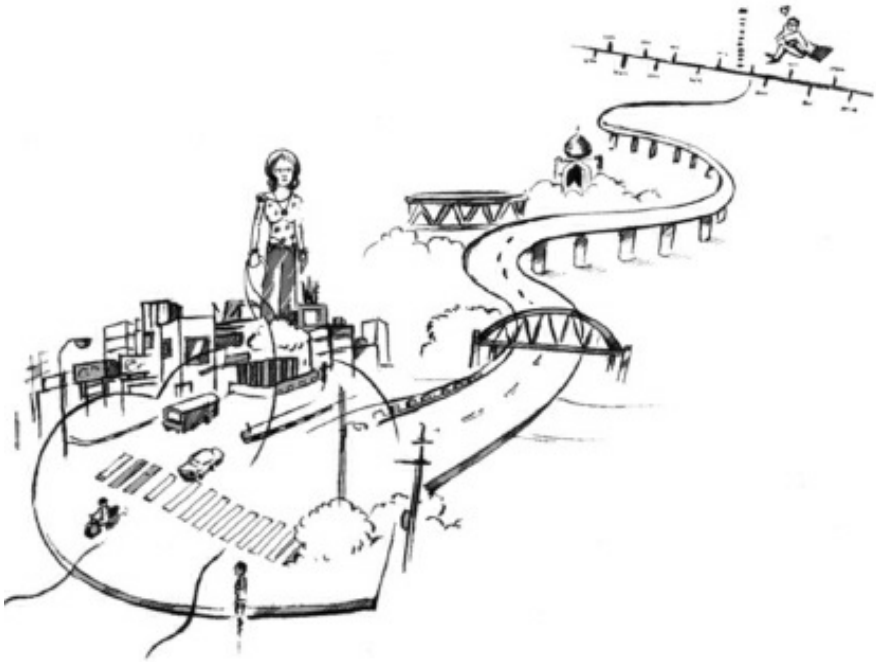

म आज माल टाउन-सा फ़ ल कर रहा ँ... और म मे ो-सी।

हाँ, जब भी तुम साउथ ए स से गुज़रती हो, म करावल नगर-सा महसूस करता ँ। चुप करो। तुम पागल हो। द ली म सब द ली-सा फ़ ल करते ह। ऐसा नह है। द ली म सब द ली नह है। जैसे हर कसी क आँख म इ क़ नह होता... अ छा, तो म साउथ ए स कैसे हो गई?

जैसे क म करावल नगर हो गया।

सही कहा तुमने...

ये बारापुला लाइओवर न होता तो साउथ ए स और सराय काले ख़ाँ क री कम न होती।

तुम मुझसे यार करते हो या शहर से?

शहर से; य क मेरा शहर तुम हो।

रा त को शहर कतना ख़ाली हो जाता है न! लगता है सारे इसे अकेला छोड़ कह और चले गए ह। चलो न, आज इस शहर को हँसाते ह। रात-भर जगाते ह। कभी पु लस के बै रकेड लाँघ जाएँगे तो कभी अँधेरे म अपने ही फ दे से फँसकर गर जाएँगे। तुम कुछ भी कर लो, शहर रात को फर भी ख़ाली लगेगा।

य ?

य क कोई अपनी त हाई यूँ ही हाथ से जाने नह देता।

सारंगा तेरी याद म...नैन ए बेचैन...मधुर तु हारे मलन बन... दन कटते नह रैन...वो अमवा का झूलना...वो पीपल क छाँव...घूँघट म जब चाँद था...मेहँद लगी थी पाँव...

प आज उजड़ कर रह गया...वो सपन का गाँव... ता नह , धीमी ग त के समाचार-सा यह गीत य सुन रहा ँ! आज यह गाना फ़ेसबुक के टेटस-सा लग रहा है। जैसे कोई अमवा और पीपल को याद कर रहा हो। चालीस साल पहले भी नो ता जया ऐसी ही थी। गाँव के गाँव उजड़ रहे थे। ेम संग का यह गीत बछड़ने क आह भरता है तो गाँव के पीछे छूट जाने-सा महसूस करता है।

वाभा वक था। गाँव ने शहर को बसाया तो सही मगर मृ तय क स लाई इतनी कर द

क कोई शहर म रहकर शहर से बछड़ने क उपमा नह देता। जैसे तु हारी याद म

मूलचंद का लाइओवर सूना लगता है, मे ो से गुज़रना बेगाना लगता है।

क मरा ही बदल रहा ँ। शहर नह । पु प वहार के इस कमरे म हमारी याद ह और तुम कहते हो सफ़ कमरा बदला है। देखो, करायेदार का अपना कोई शहर नह होता। द ली के लाख मकान म जाने

कतने शहर रहते ह गे। तुम उ ह मकान क छत पर मली थ । पता ही बदलने जा रहा

है।

नह , तुम ब कुल इमोशनल नह हो। काश, इस शहर का दामन होता... तो या कर लेती?

हम उसके दामन म अपना कमरा बना लेते...

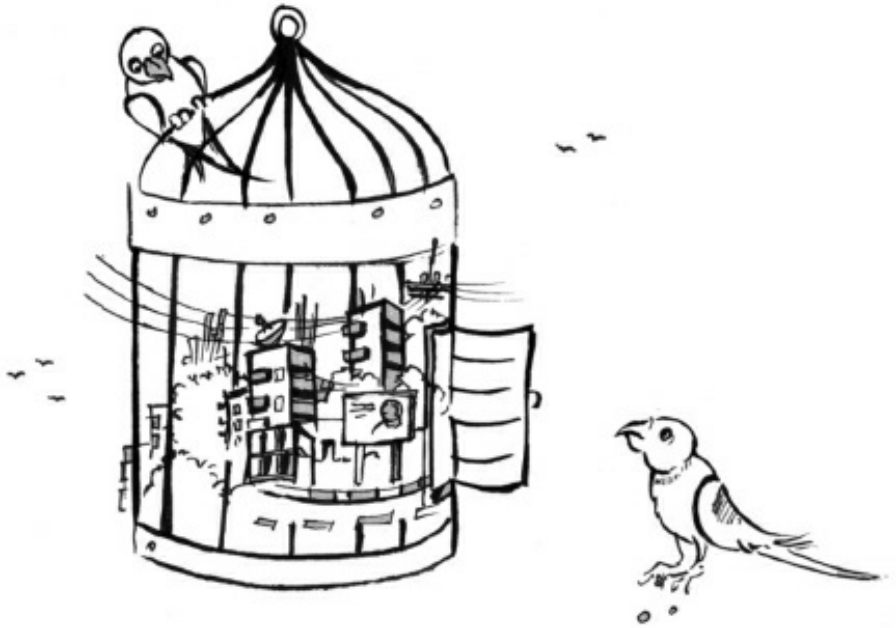

ने ह पाक क झा ड़य म सरसराहट से दोन सहम गए। प य क झुरमुट से धड़कती आँख से कोई उ ह भकोस रहा था। द ली म महफूज़ जगह क तलाश दो ही लोग करते ह— ज ह ेम करना है और ज ह ेम करते ए लोग को देखना है। घबराहट म दोन इतनी तेज़ी से उठे क पास क झा ड़य म भी हलचल मच गई। े मय को लगा क पु लस आ गई है। उसका कहा याद रहा—यह कैसा शहर है? हर व त शरीर का पीछा करता रहता है!

बा रापुला लाइओवर से मायूँ के मक़बरे क पीठ, नज़ामुद् द न क छत, उन पर सूखते कपड़े, कार से उतरते ही वह कहने लगी—आसमान और छत के बीच होने जैसा लगता है यहाँ, ऊँचाई पर होने के बाद भी द ली और तु हारे यार के बीच क ज़मीन लगती है ये जगह।

आँख से कैमरा उतार कर मु कुरा दया। इतना ही कहा— द ली का यह कोना सुकून जैसा है न! ब कुल तु हारे जैसा...

सूरज क करण पीछे हटने लग जैसे कोई खड़क का पदा धीरे-धीरे ख च रहा हो। गंगा से आती हवाएँ उसक नारंगी साड़ी उड़ाने लग । एक हाथ रे लग पर और एक उसके हाथ म। दोन क पीठ हावड़ा ज क तरफ़। पास से गुज़रते हज़ार लोग। सामने एका त बनाती गंगा। शहर और गंगा के बीच एक ही द वार थी। दोन क पीठ। अपनी पीठ को द वार बना दोन हावड़ा ज क बालकनी म सपन को भगो रहे थे...

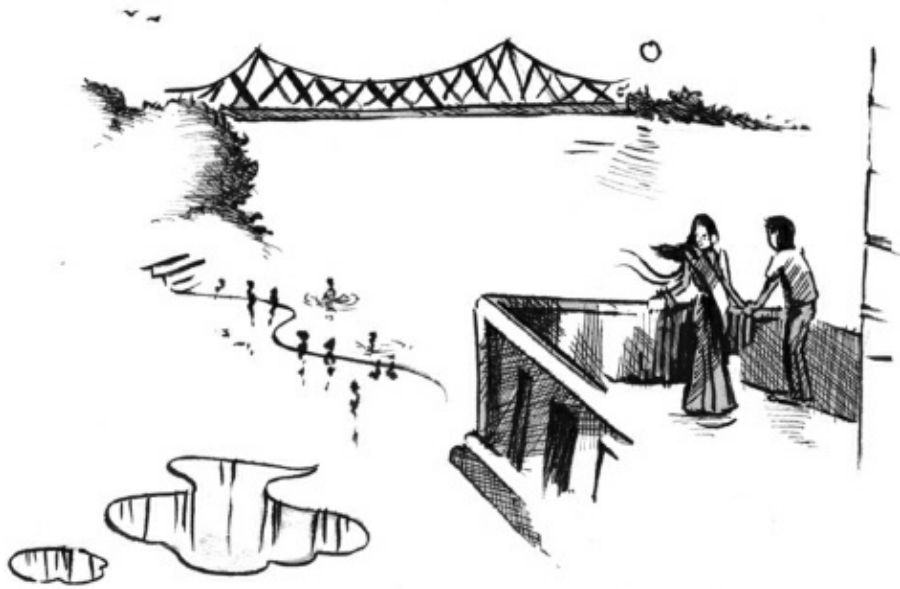

दो न को भोर के व त द ली क सड़क पर नकलने म मज़ा आता। सराय काले ख़ाँ से डीएनडी के लाइओवर पर प ँचते ही बड़ा-सा लाल सूरज ओखला के आसमान म नज़र आने लगा। आ म क तरफ़ उतरते व त वह कहने लगी क काश नीचे यमुना भी बची होती।

दखावे के इस कृ त- ेम पर वह झुँझला पड़ा।

यमुना वहार से यहाँ तक आने म मेरा तेल नकल गया है और तुम नद के लए रो रही हो। जगह क तलाश म हम इस शहर म और कतने शहर बदलगे!

दो न क मुलाक़ात छ रपुर के म दर म ई। मगर अ छा लगता था उ ह जामा म जद म बैठना। इ तहास से साझा होने के बहाने वतमान का यह एका त। 'करीम' से खाकर दोन म जद क मीनार पर ज़ र चढ़ते। भीतर के सँकरे रा ते से होते

ए ऊँचाई से द ली देखने का डर और हाथ को पकड़ लेने का भरोसा। पश क यही

ऊजा दोन को शहरी बना रही थी। चलते-चलते टकराने क जगह भी तो ब त नह

द ली म!

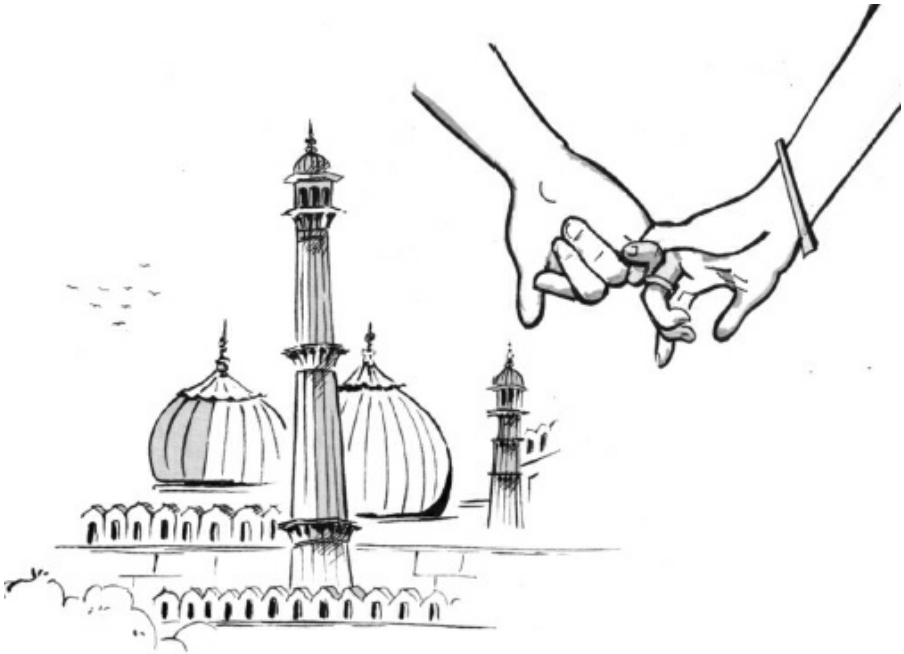

बाहर बची ख़ूबसूरती ने करावलनगर म सनसनी फैला द । करावलनगर के लोग भी छत -क सी अनजान जगह म उसे जी-भर देख लेने क बेचैनी करावल नगर ले आई। ेटर कैलाश के हसीन मकान के बर स उजाड़ और अधूरे घर का नगर। कपड़ से ग लय से उसे देखने लगे।

शट, कहाँ ले आए मुझे! हम महरौली के फ़ाम हाउसवाली सड़क पर भी तो जा सकते थे!

खा नपुर से बदरपुर क बस म ठुँसी भीड़ ने दोन को ऐसे शहर मे प ँचा दया जहाँ उनके अलावा सब अजनबी थे। हर टॉप पर चढ़नेवाली भीड़ के ध के से दोन और क़रीब होते जा रहे थे। बस भाग तो रही थी सीधी मगर उ ह हर बार लगा क कसी मोड़ पर तेज़ी से मुड़ रही है और गरने से बचाने के लए एक सरे को थामना ज़ री है। शहर म ेम के ऐसे कोने अपने आप बन जाया करते ह। भीड़ म घूरे जाने के बाद भी।

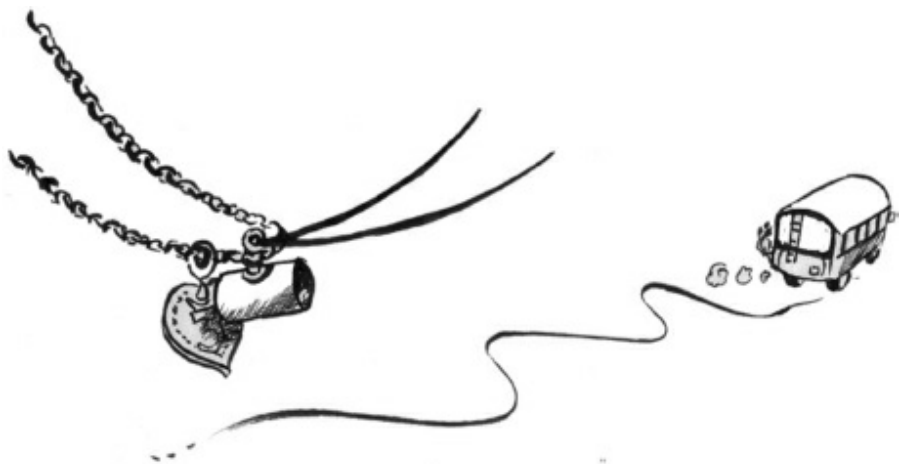

बा रश से बचने के लए उसने अपना कूटर मूलच द लाइओवर के नीचे पाक कर दया। दोन एक सरे म इतना खोए रहे क यान ही न रहा क अगल-बग़ल म पचास कूटरवाले बा रश ख़ म होने का इ तज़ार कर रहे ह। वह बना वजह उसके लए छाता बनने क को शश करता रहा। उसे भी बना ज़ रत लाइओवर के नीचे एक छाते का अहसास अ छा लग रहा था। अगल-बग़ल खड़े सैकड़ लोग कसी बादल के बचे टुकड़े क तरह उ ह घूर रहे थे...

सा री द वार पर कुछ न कुछ लख दया गया था। हर टेटस के साथ कमट भरा था। घोड़े पर सवार वह उगते सूरज क रौशनी से नकला चला आ रहा था। मान सक अवसाद से घरे इस शहर म हर लाइक डसलाइक क तरह उदास लग रही थी। घोड़े क टाप त वीर पर पड़ती जा रही थी। बाग़ से लेकर बाँह म पसरे लोग क त वीर। घुड़सवार। ख़ामोश जबान के इस शहर म श द क मौत का ऐलान पढ़ता जा रहा था। सारे श द टेटस क द वार पर मार कर लटकाए जा रहे थे। कैमरे के लोज़-अप म घुड़सवार क आँख ू र लग रही थ । श द क लाश से बछ गया है ये शहर। कोई ऐसी बात नह जो कही न गई हो। कोई ऐसी लाश नह जस पर श द क काठ न लद हो। बस एक आग क तलाश म घुड़सवार भागा जा रहा था। ये द वार का शहर है बाबू। यहाँ हर द वार पर श द क लाश टँगी है—इस आवाज़ ने पागल कर दया। घोड़ा

हन हनाया। टाँग उठाई। घुड़सवार पीछे झुका। आसमान क तऱफ उठा। लाख श द

पपड़ी बनकर उड़े जा रहे थे। आपस म जुड़कर नेटवक बनते जा रहे थे। शहर... श दकोश म दफ़न होने लगा है।

होना, संग होना

फर- फर...

क कान से होती ई क - रग, छोले, तरह-तरह के मोज के बीच से टन लेती ई उस पा इडरमैन क तरह मे ो पर सवार जब वह आन द वहार उतरा तो मदानापन त करने के डा टर के दाव से घर

गया। वहाँ से नज़र हट तो मश र चाट ऑटो टड पर टक , जहाँ वह आई तो सही समय पर ले कन पट् टे का नक़ाब उतारना भूल गई। उस व त ऑटो से ऐसी कई नक़ाबपोश लड़ कयाँ उतरी थ । बाइक सवार क

पछली सीट पर भी ऐसी ही लड़ कयाँ गुज़री थ । शखर और राज ी गुटखा क ल ड़य से बचते ए आन द वहार क आवाजाही म उसक च लाहट खो गई। सब कान म ईयर पीस ठूँसे सी ढ़याँ चढ़े जा रहे थे। यहाँ सब एक सरे से पराए ह। बुदबुदाते ए जब उसने मोबाइल का कॉल बटन दबाया तो एक जैसे कई रग टोन बजने लगे। एक जैसे

पट् टे, कॉलर ट् यून और ईयर पीस के दौर म हमारा इ क़ भी आनंद वहार जैसा है।

अराजक चौराहा!

तु म लाइओवर क तरह सपने दखाती हो। पता ही नह चलता क ढलान से उतरते ही सपने जाम म फँस जाएँगे। मे डकल लाइओवर क तरह हवा म उड़ने के सपने धौलाकुआँ क तरफ़ उतरते ही काफ़ूर हो जाते ह। ठ क है, ले कन साउथ ए स का जाम कम-से-कम सड़क कनारे मा कट के चमकते हो डग म सपने जैसा तो लगता है न! तुम हमेशा सरो जनी नगर के पीले वाटर क तरह उदास य हो जाते हो?

य क तुम अ सर सेले ट सट मॉल क तरह झूठ लगती हो। हा-हाऽऽ ये रहा

बारापुला और वह रहा मायूँ का मक़बरा। कहो तो डफस कालोनी क तरफ़ उतर जाएँ...

मालूम नह !

कोई भी सड़क पूरी तरह सुनसान नह होती। जब भी उसके ख़ाली होने का अहसास होता है, कोई न कोई, कसी न कसी कोने से सड़क पर आ जाता है। स अनवर शाह रोड पर ऐसे ही अचानक से एक प सर बाइक नकल आई थी। ऊँची सीट पर बैठ तो थी मगर वह लद ई लग रही थी। हे मेट से हे मेट टकरा रहे थे। चाय क कान पर प सर के कते ही प स रेट तेज़ हो गए।

यहाँ तो कोई नह होगा न?

उसने सलीके से उसक हे मेट का ैप खोला ही था क कोई सामने आ गया। जैसे कुछ

आ ही नह , जैसे कसी ने देखा ही नह , बस वह फर उसी सीट पर जा बैठ । अ दाज़

कुछ ऐसा था क यश चोपड़ा क ना यका भी वैसे न बैठ पाए। लड़के ने भी देखनेवाले को अनदेखा कर दया। क ई बाइक पर ब तयाते ए टक गए दोन । इ क़ म सफ़ देखना ही नह होता, अनदेखा भी करना होता है।

खेपा रे केनो खूं जश मोनेर मानुष— गाने क आवाज़ कसी खड़क से आ रही थी; मतलब—रे पागल, आदमी का मन य खोजता है...

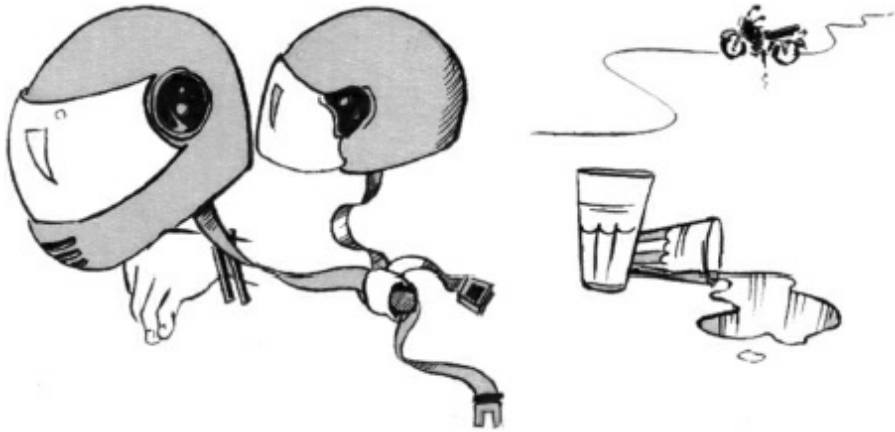

मे ो ने अचानक उनक गली को बदल दया। अनजाने लोग आने-जाने लगे। दोन ने दस बाई दस के कमरे के वाब को कान म बदल दया। ख़ुद महफ़ूज़ जगह क तलाश म मे ो से द ली घूमने लगे। वह ले डज़ कूपे म ब द हो गई और ये जे ट्स कूपे म। उनका सफ़र ऐसे बँट गया जैसे खाप आ गया हो। उसक शकायत बढ़ने लग । जब कह प ँचकर उतरने के बाद ही मलना हो तो फर सफ़र का झंझट य ? यही तो तुम नह समझती हो। कुछ तो हो जीवन म क तुमसे मलने क बेक़रारी बढ़ती जाए। भोजला पहाड़ी क ऊँचाई से भी चतली कबर के चौराहे क भीड़ म तुमको पहचानने लगा था। बात सफ़र क नह है, बात अनजाने रा त पर सफ़र क है। इ क़ म अजनबी न रहे तो इ क़ नह रहता...

इ ले ॉ नक मीटर। जैसे उसक ईमानदारी का स ट फकेट। काले कपड़ म लपटे कोक के बोतल से पानी गटकता आ बोले जा रहा था—मेहनत क ही नह , ईमानदारी क भी कमाई है। मीटर से चलता ँ। ईमानदारी म कमती कैसे कर ँ। देखो बात अगर लोधी गाडन प ँचने क है तो ये जो पदा है न, म गरा लो। मेरे ऑटो म बैक मीटर नह है। पीछे खड़ी वह शरमा भी रही थी और ग़ सा

भी रही थी। ऑटोवाला बोलता जा रहा था। मेरे ऑटो म फलाने चलते थे। उनके तो अब ब चे ह। आप फलाने को जानते ह। वह भी मेरे आटो म लोधी गाडन जाते थे। उनका भी घर बस गया। एक

दन तुम भी लोधी गाडन आना ब द कर दोगे। उनक तरह। पता नह य शाद के बाद

ऑटो म चलना छोड़ देते ह। लोधी गाडन भी नह आते। चलोगे या जाऊँ कसी और सवारी क तलाश म?

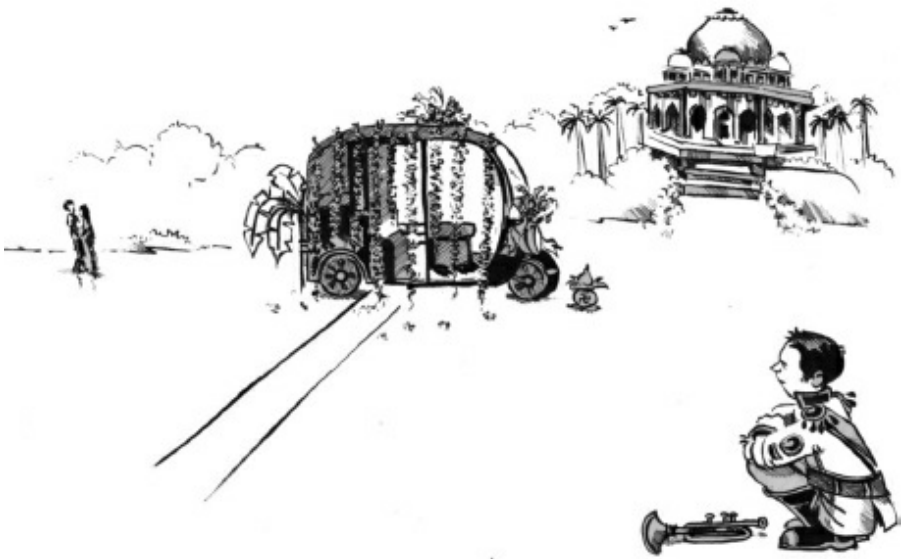

मा मा च के महीने म हवाएँ गरम होने लगी थ । दोन क ज़द क ऑटोवाला दोन तरफ़ का पदा गरा दे। ऑटो के शोर म भी भीतर ग़ज़ब क ख़ामोशी छा गई। चालक क एक आँख बैक मरर पर टक गई। दोन बैक मरर से बचने के लए एक सरे म छपने लगे। चालक ने मीटर का हसाब छोड़ दया। ऑटो तेज़ी से शंकर रोड क तरफ़ दौड़ने लगा...

मे ो ने मालवीय नगर को मॉडल टाउन से जोड़ दया है। घंटे-भर म दनदनाती ई ेन ने दोन क

री काफ़ कम कर द है। व त तो बच गया मगर कहने को कुछ बचा ही नह । वे तमाम योजनाएँ जो दोन ने बनाई थ , अब आउटसोस होने लगी ह। साथ-साथ कुछ सोचने और करने का फ़न कम होता जा रहा था। यार तुम बस से आया करो न...

य ? मे ो म या ो लम है?

कम-से-कम फ़ोन कर पूछने का मौक़ा तो मलेगा क कहाँ हो, कब आओगे। इ क़ म हम बेरोज़गार हो गए ह। चलना न फरना। कब तक मे ो से उतर कर हम मॉल के ख भ से चुपचाप चपके रहगे? इस मे ो को कह दो क जाए यहाँ से...

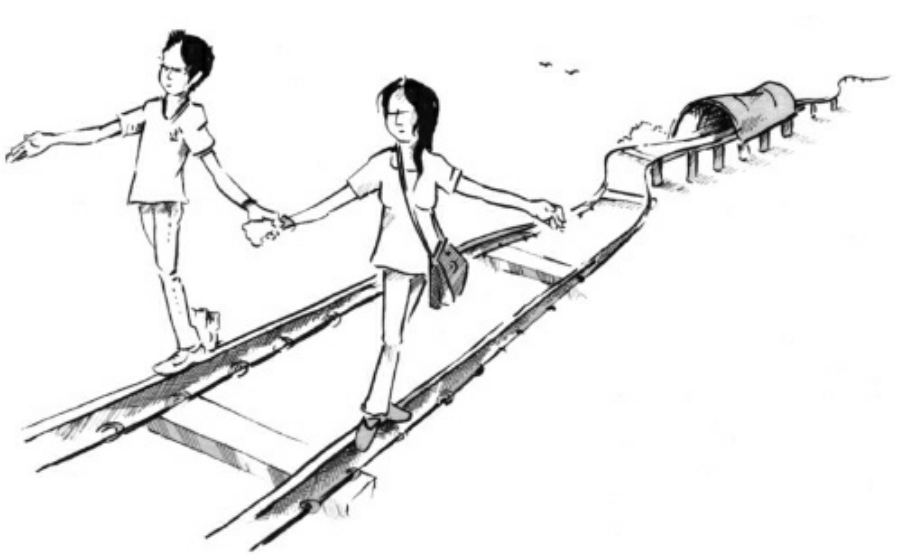

द ली क बस कतनी बदल गई ह न! हाँ, लेलड से माक पोलो हो गई ह। चलती कम ह भटकाती यादा ह। तुम हमेशा इतने नगे टव कैसे हो जाते हो?

अरे नह , इस शहर म यही तो पो ज़ टव है।

या?

माक पोलो। ये बस न होती तो तुम कहाँ भटकती, हम कहाँ मलते। सरो जनी नगर म सीसीट वी कैमरे लगे ह। लाजपत नगर का यही हाल है। शहर का हर उजाला कैमरे म क़ैद है। माक पोलो का भटकना हमारे लए अ छा है दो त। बस का नाम लेते हो और मेरा नाम य नह समर...

हम बस म ह...और कोई सुन लेगा।

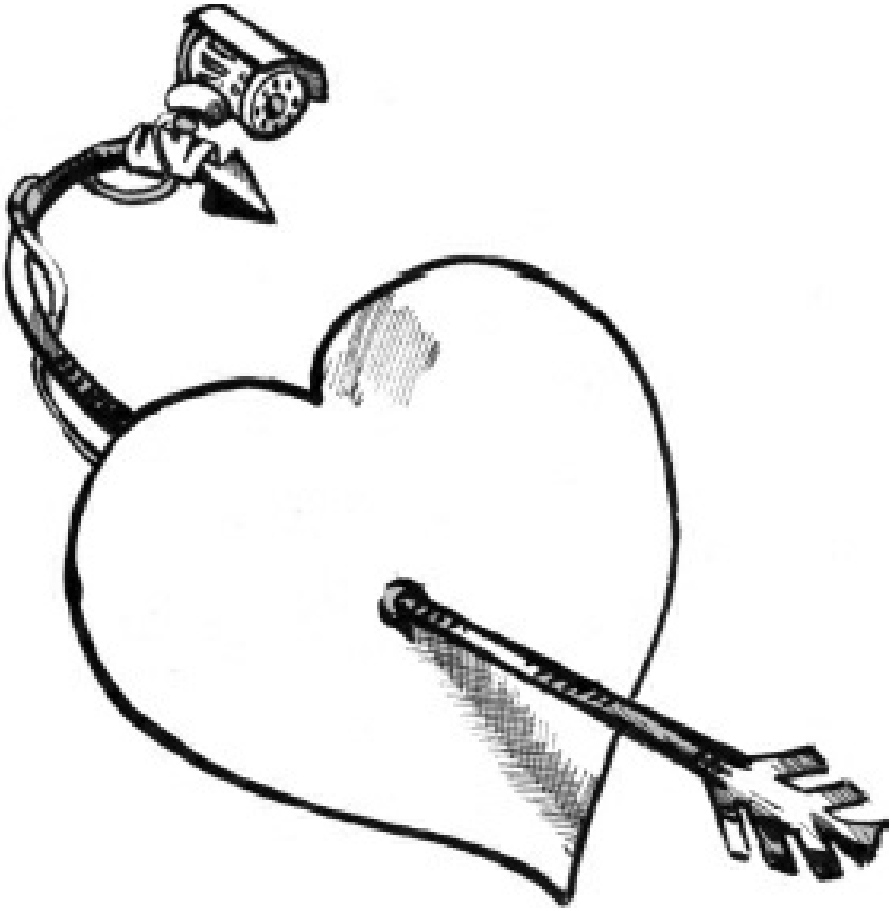

ऑटो शोर नह करता तो भीतर का एका त महफ़ूज़ न होता। पश से संवाद का अँधेरा कमरा न बनता और ाइवर ज़माने को कोसता आ बैक मरर म देखता ऑटो न चलाता। ऐसा कम होता है जब दोन एक जैसा सोचने लगते। बोल उठा, समझ नह आता छूना मना है या ऑटो अंकल का पीछे देखना। बात मना होने क नह , मानने क है, वह बोली, ये देखो एक तरफ़ से क र मा आंट और तु हारी तरफ़ मदर ऐ या। जाने कसे देख रहे ह। हम सब तरफ़ से देखे जा रहे ह। ऑटो अंकल इ ह बात म उलझते देख नराश हो गए। सीन के इ तज़ार म सफ़र ल बा कर दया। रज़ क तरफ़ मोड़ ले गए, शायद यहाँ क सड़क जोड़े को फर से लपटने का मौक़ा दे दे और उ ह देखने का।

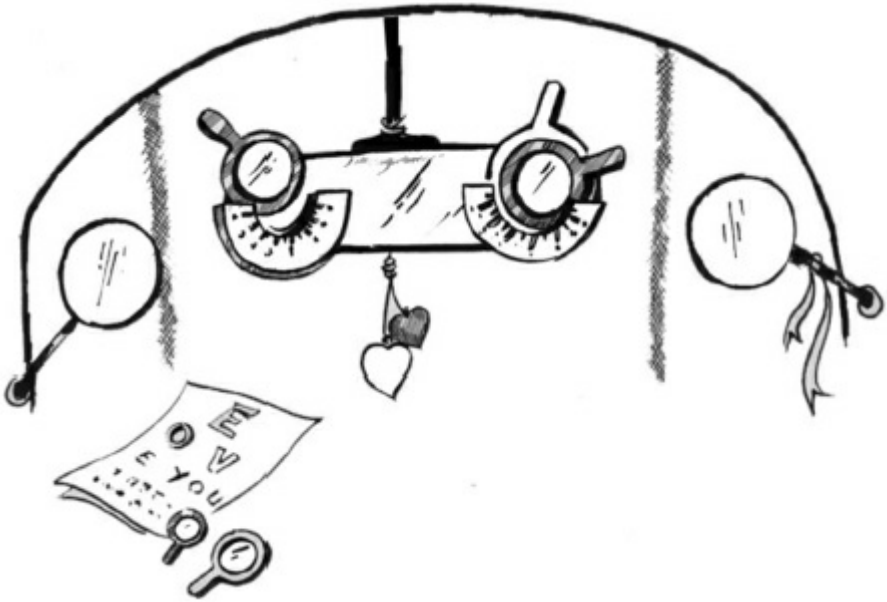

से टर-18 माकट म मे ो क पटरी छतरी बन गई। मोटे ख भे के पीछे वह देर तक खड़ी रही। बाइक को बा रश से बचाने के बहाने दोन ख़ुद को ज़माने क नज़र से बचा रहे थे। सामने ख भे के पीछे से पा कगवाले क घूरती नगाह ने उनके अकेलेपन को तोड़ दया। अब उ ह ऊपर से गुज़रती मे ो का शोर सुनाई देने लगा। हॉन क आवाज़ से कान फटने लगे। मु कल से एक कोना ढूँढ़ा मगर नगाह ने उसे चौराहा बना दया।

रे डयो क आवाज़ आने लगी थी। उसक कार धौलाकुआँ से मुड़ कर ए स क तरफ़ दौड़ने लगी थी। लौटने के फ़ैसले का साहस नह जुटा सक । न ही वह मोतीबाग से यू-टन लेकर उसके पीछे आया। एक सरे के आने और मनाने के इ तज़ार म दोन ब त र चले गए। गाज़ीपुर प ँचकर सामने गा ज़याबाद था। शवमू त के बाद गुड़गाँव आ चुका था।

शहर क ेम कहा नयाँ ऐसी ही होती ह। ै फ़क म शु होती ह और ै फ़क म गुम हो जाती ह।

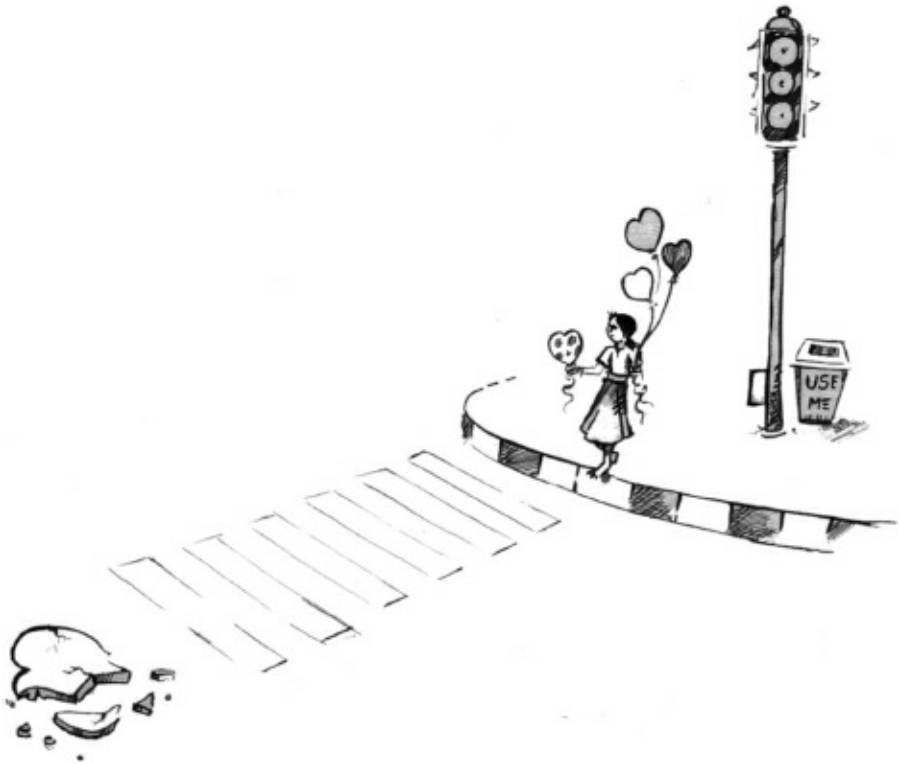

लव ए ज़ाम नोट् स

घूमी फरी, उ फ़!

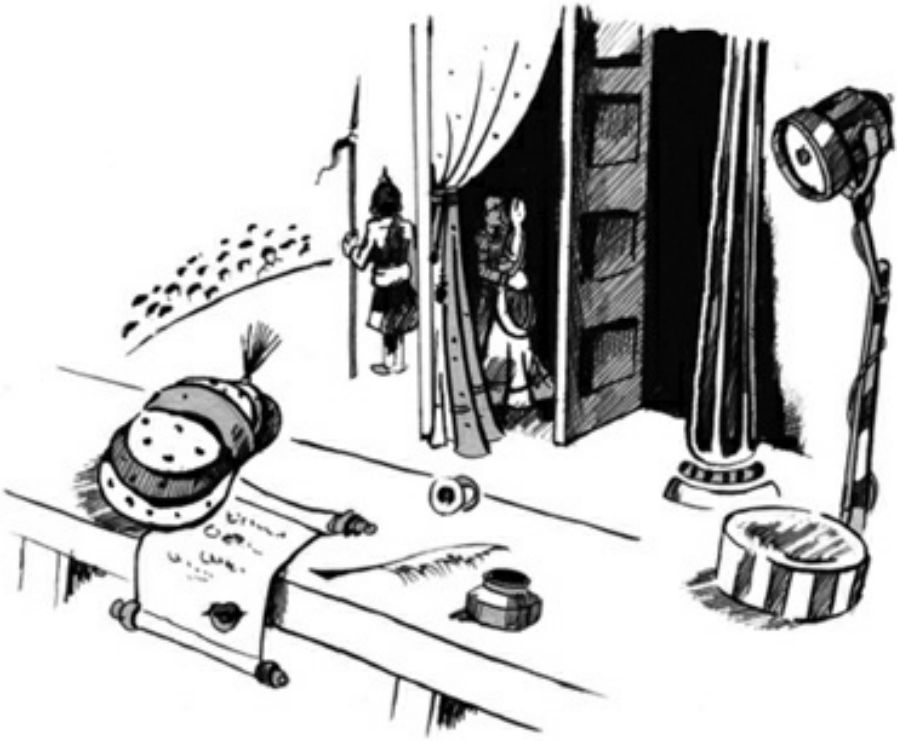

रा त को पछले दरवाज़े से नकलने का आद था वह। आहट बचाकर चलनेवाला ेमी। बाहर जाकर इ क़ पर फ़रमान जारी करवाता और अ दर महबूब के क़दम पे लेट जाता था। एक दन उसके हाथ से महबूब का हाथ छूट गया। नाराज़ होकर बोली, ज़ूर क ख़दमत भी करते हो और ख़ा तरदारी से डरते हो। चलो म तुमको अपना बनाकर

नया को बता देती ँ।

उसने अपनी आहट को फर छुपाने क को शश क । गुदगुद से फटने लगा। बोल उठा, मोह बत का द तूर अजब है। क़ायल आपक आँख का आ और घायल आपक आदत से। कर द जए ऐलान।

सरकार बाहर आकर कहने लग , यह मेरी जा नब से आ शक़-ए-सरकार के ख़ताब से नवाज़ा जाता है।

बस नाटक के इस अ त से कॉलेज म हंगामा हो गया। हंगामे के बहाने दोन पद के पीछे चले गए और लपट गए। चूमने के लए हंगामे से बेहतर व त कोई नह होता...

दे र रात तक कौन जागता होगा? चाँद और परेशान।

और सोता कौन होगा?

...आसमान।

हा-हाऽऽ तुम दाश नक कब से हो ग !

तभी से, जब तुम आ शक़ हो गए...

सु नो, म तु ह चाँद ला ूँगा। तुम उसे सरहाने रख लेना और रात को जागकर मॉल रोड पर गुमशुदा चाँद के नशान ढूँढ़ना। म मंगल क तरफ़ जाता तु ह नहारता र ूँगा। कब तक हम नेह

पाक और कनाट लेस का सपना देखते रहगे। तुम कुछ कहती

य नह ...

या क ँ, इ क़ म तुम साइं ट ट-सी बात करने लगे हो। तुम चाँद के च कर म के मकल

रए शन के शकार हो रहे हो। डीट सी क एसी बस म बैठकर कोडा कार देखकर आह

भरने का यह मतलब नह क तुम मेरी आँख म चाँद नह देख सकते। इ क़ को

फ़ ज़ स य बनाते हो!

चा र क़दम से दो लोग आगे बढ़ते जा रहे ह। दो हाथ बँधे ह और दो खुले। पाँव के नीचे क सड़क चल रही है और सर से आसमान गुज़र रहा है। ह कालेज क द वार के साथ गरे पड़े प पर ू ट के टे ा पैक फकने क ध प आवाज़ से न द टूट गई थी। हम द वार के साए म य चल रहे ह, समर। इस तरफ़ से य नह जस तरफ़ खुली सड़क है।

ऐसा होता नह है मेरी दो त। इ क़ म जस तरफ़ से भी चलो, तुम द वार के साए से घर ही जाओगी। ये जो आसमान है जससे तु ह लगता है क एक खुला-सा साया है, दरअसल पहरा है।

तो समर, म तु हारी नगाह म ँ या क़ायनात क ?

ऐसा नह है...मेरी नगाह म तो हो तुम, ले कन द वार क नगाह से बचके नह । कम-से-कम तुम मेरा नाम लेकर तो बुला सकते थे...या कोई सुन भी रहा है...

को ई और होता तो वह नई सड़क जाकर चै पयन गाइड न लाता। इस बार तय कर लया क बता देगा क गी के सहारे वक ल बनने का सपना तीस हज़ारी से आगे नह जानेवाला। वह जानती थी मगर उसने कभी नह बताया क तु हारे त कए के नीचे पड़ी गी (गाइड) से यह म टूट गया है क लॉ फैक् के बाद तुम हरीश धवन या जेठमलानी बननेवाले हो। तीस हज़ारी के सपने आन द पवत के कराये के मकान म क़ैद हो कर रह जाएँगे।

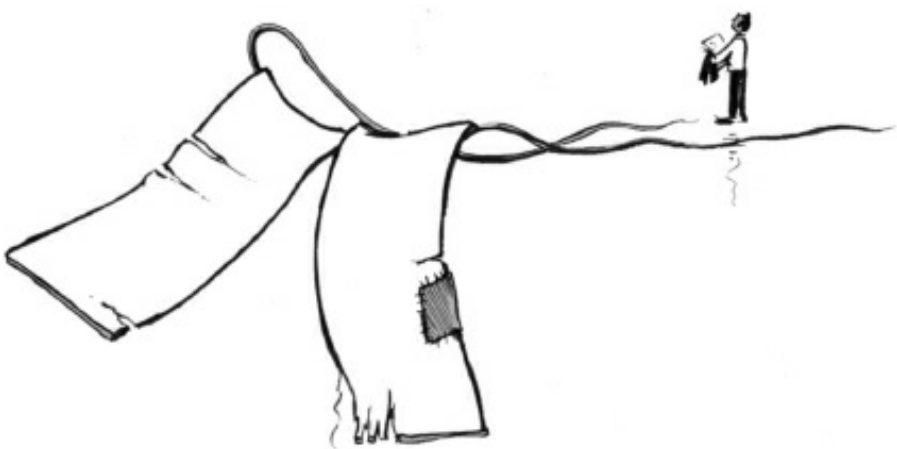

कु छ तो था द ली हाट म। दोन ेमी क तरह खो जाया करते। ऐसा य होता था क मॉल रोड से ह कॉलेज तक आते-आते भाई-बहन क तरह चलने लगते? जान-पहचान क जगह से अनजान

जगह म जाना ही इ क़ म शहर होना है। अ सर कहती थी— ांस म लोग सड़क पर ही एक सरे को आ लगन म भर लेते ह। काफ़ थक जाते होगे तुम भी। चलते-चलते...

तरफ़ दौड़ने लगी। 360 गाँव से घरी द ली के खाप से बचना मु कल था। अपनी या यार सलीब होता है? अपने चाहनेवाल को कैसे चुनते हो? '7 ख़ून माफ़' के गाने से वह भागने लगी। मै ेयी कॉलेज से नकल नज़फ़गढ़ क बजाय ए स क बेचै नय को लेकर ए स के घुमावदार लाइओवर म छर क तरह नाचने लगी। धौलाकुआँ पहले ही ख़तरनाक हो चुका है...

पै दल चलनेवाले जोड़े अ सर कार म बैठे जोड़े से जला करते। खालसा कॉलेज से नकलती कार क ढन- चकवा यू ज़क और सामने क सीट पर बैठ बाला। माल रोड तक चलते-चलते वह अमीरी के साइड इफ़े ट पर थी सस रच देता। आ थक

वषमता ेम के मायने बदल देती है। ग़रीबी रेखा से नीचेवाल का यार खालसा से नकलती कारवाले या जानगे!

कमलानगर जाकर चाचा के यहाँ आइस म खा लेना ही इ क़ का इ तहान नह है।

गो ला देने गया होगा... दो त क खीझ को छोड़ वह रोज़ चार बजे पी.जी. वूमे स हॉ टल क तरफ़ चल देता। हॉ टल के बाहर जीवन, ज़मीन और जानम के वमश म मा सवाद ठेलता रहता। कभी ख़ुद को गंगा पार का ज़म दार बताता तो कभी ग़रीब। द ली क लड़ कय म सुनने का धीरज न होता तो बहार-यूपी से आए वासी बाँकुरे गोलाबाज़ न हो पाते! पाँच बजते ही वह हर बार यही कहती—ब त कं यू ज़ग है...बट इंटरे टंग है! वह ख़ुश हो कर लौट आता।

अ छा है न, म ट ले स ने मा नग शो का मतलब बदल दया। वना तो आना और नकलना ही मु कल था। देखो अब म तु हारा हाथ पकड़ सकता ँ। अ य कुमार को जी-भर कूदने दो। इस व त हॉल म हम ह। हमारे जैसे कुछ और जोड़े। बस। ख़ाली कु सय का शु या!

तुम हमेशा अँधेरे म मुझे य खोजते हो?

इस एक सवाल ने सनेमा हॉल को थाने म बदल दया। वह कॉफ़ लाने चला गया।

मा इनस मु का म पीछे क , कनारेवाली सीट मल गई। उसने उसके क धे पर सर टका दया। कब न द आ गई और कब सराय काले ख़ाँ, आ म, धौलाकुआँ, और वज़ीराबाद होते ए जुबली हॉ टल आ गया, पता ही नह चला। वह खोई रही या सोई रही, यह भी जान नह सका। वह तो बस उसक तरफ़ आती हर नगाह से टकराने म

भड़ा रहा।

उतरते व त उसने ठ क कहा—तुम मेरी कम, नया क फ़ यादा करते हो। कम-से-कम बैग के नीचे मेरा हाथ तो थामे रह सकते थे। बुज़ दल!

उस रोज़ के बाद वह अ सर मुखज नगर म भटकती दख जाती। उससे नोट् स हड़पने के बाद उसने अपना लैट बदल लया था। वह आदत से मजबूर हो चुक थी। मुखज नगर का हर कमरा अँधेरा लगता जसम वह अपने ेम के उजाले से झाँका करती। ले कन वह अब हक़ क़तनगर के एक कमरे म उसके ही लखे नोट् स को रट रहा था। तय कर लया था। पीट के टाइम म ेमी नह होना है। द वार पर हसीना क त वीर नह थी। टाइम टेबल था। उसके बाप का सपना था...

दो त को बताया क ज ट ड शप है। वैसी नह है वह। मलते ही सफ़ाई देने लगता। हम दोन आट् स फ़ैक गए थे। हेड से मलने। स ल लाइ ेरी म साथ-साथ कताब को ढूँढ़ना और उसक छत पर जाकर चाय पीना। द ली यू नव सट म चाय क इससे अ छ जगह नह थी।

कुछ र ते ऐसे ही होते है, नई-नई जगह उभर आती ह। नए-नए बहाने बनने लगते ह। वह जानती थी। यह वैसा नह है। पर इसे ही नह मालूम था क वह वैसा ही है।

स ब ध म एक भी नह सँभाल पाया वह उनके ख़त को य सहेजे ए है! इसी ख ड़क के पीछे

रखी चाबी से ताला खोल वह अ दर आ गई। कसी जासूस नगाह से कमरे को देखने लगी। उसके ब से म वो तमाम ख़त मले। जो आदमी इतने उधेड़बुन म उसने एक ख़त लखकर ब से को ब द कर दया। म जा रही ँ। हो सके तो मेरे ख़त को भी सँभालकर रखना। तु ह पता होगा—पहले क तमाम े मकाएँ मुझसे बेहतर लखती ह। मने जान-बूझकर कमतर लखा है।

दे खो, आ म जाम क क़सम। बा रश से बचने के लए जस फ़ट ज़ के नीचे तुम छुपे थे, उसक क़सम। मूलच द अंडरपास के अँधेरे म पकड़ा था हाथ मेरा, उसक क़सम, द ली हाट म मेरे च मच से तुमने खाई थी आइस म, धौलाकुआँ के चाइना बॉल म क ू यू शयस क बात म हम कतना खो गए थे, कॉलेज से मॉल रोड पर आते ही लगता था क द ली का आँगन खुल गया है। बस एक ही गुज़ा रश है—हमारे यार से इस शहर को कभी जुदा मत करना।

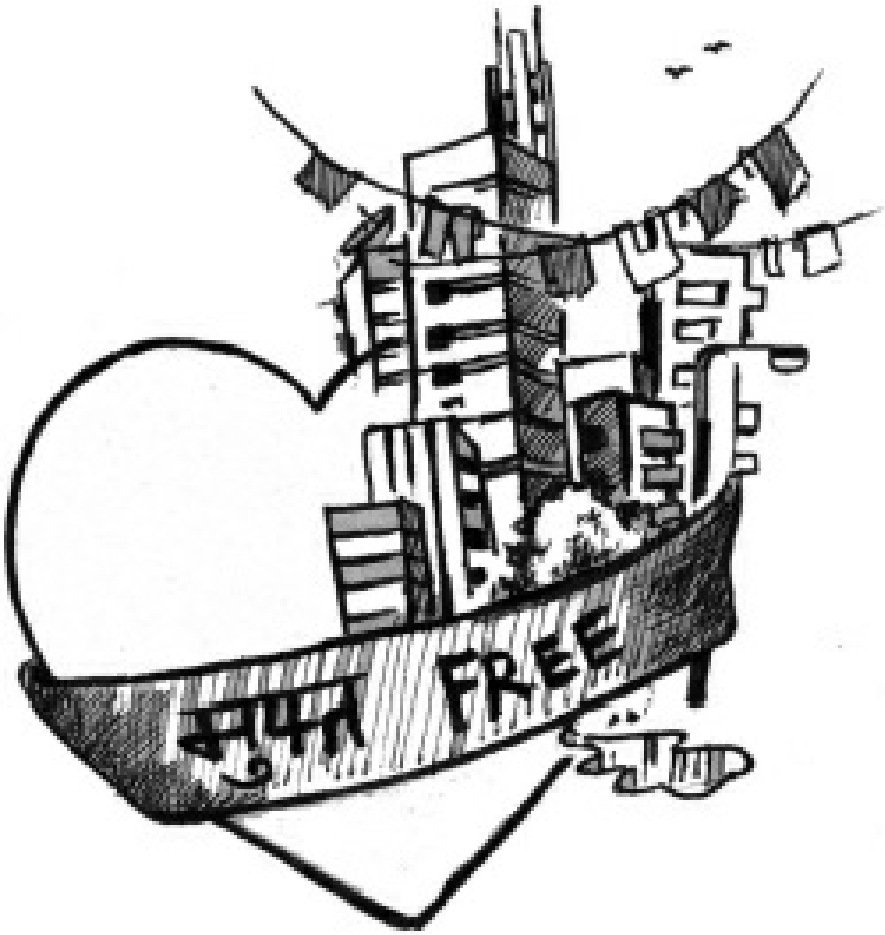

कुछ तेरा-सा

कुछ मेरा-सा

ला जपतनगर क मोमोवाली पर उसका दल आ गया। नाथ ई ट के सतबहनी मु क को उसने न शे म ही देखा था। रोज़ शाम को च कर काटना उसक आदत म शुमार हो गया। वह चुपचाप फुल लेट मोमो म एक पीस यादा देने लगी। ह क मु कुराहट के बाद रोज़ बोल कर जाता क ब त अ छा है। शाह ख़ क ‘ दल से’ देखने के बाद उसे लगने लगा क इस एक पीस अ त र मोमो से ेम का नया रा ता खुल रहा है।

खाना और पैसे देना। लाजपतनगर क आं टय को कभी फ़क़ ही नह पड़ा क नाथ इं डया वाला नाथ ई ट क लड़क के खोमचे के पास रोज़ चार बजे य खड़ा रहता है। सं कृ तय का मलन माकट लेस म ही हो सकता है। बस एक ही ग़लती हो गई। उसने मोमो के बदले एक दन घर से आया ठेकुआ दे दया। वह मोमो खाने के शौक़ क आ ख़री शाम हो गई...

आ जकल तुम ह चैनल हो गए हो। ह चैनल? या बात करती हो। और नह तो या। तु हारी बात, तु हारे टेटस और तु हारी ये जगह। यह भी कोई आने क जगह है! वशाल मायूँ के मक़बरे के नीचे। क़ले, खंडहर और मक़बर म आ शक़ जवान होने से पहले ही द वार क वा हश पालने लगती है। हम असहाय नह लगते यहाँ?

तो कहाँ जाएँ इस शहर म! यहाँ अब कोई और य नह दखता? सभी पेड़ क छाँह ख़ाली-ख़ाली सी लगती है न, जानेमन?

इसी लए म बताती ँ। कभी-कभी एम ट वी क तरह शहर और सनेमा के वतमान म जीना चा हए। सले ट सट मॉल चलते ह। तीसरे लोर का वह आ ख़री ख भा, जहाँ खड़े जोड़े को देख हम लौट आए थे। द वार पर अपना नाम लखना ज़ री है या? कल उनका तो आज अपना।

व ह राजकुमार घोड़े क पीठ पर बैठा राजपथ पर चला जा रहा था। घोड़े क टाप क आवाज़ उठती ई रायसीना ह स क तरफ़ बढ़ने लगी। धनतेरस म ट ल का

ट फ़न बॉ स ख़रीद कर उसने मालवीयनगर क महबूबा को बता दया था क आज के

दौर म मुमताज को यही नसीब है। आसमान म नकला चाँद चीन म बने अपने डु लीकेट से लोहा ले रहा था। ज़मीन पर घोड़े क टाप से उड़ती धूल से उसक आँख क तकलीफ़ बढ़ती जा रही थी। अपने ल बे बाल को खोल उसने हवा को रोकने क को शश तो क मगर कान के ऊपर से सरकती

ई उँग लय ने मदहोश कर दया। राजकुमार बोला— जब कुछ भी नह बचेगा तो इस ट फ़न बॉ स म हम मोह बत क दो रो टयाँ रखा करगे...

मा लवीयनगर क महबूबा जब से फामूला वन देखकर आई है, राजा गाडन के राजकुमार को भाव ही नह दे रही। ह द मी डयम के राजकुमार क यही ासद होती है। वे इं लश मी डयम क गल ड के साथ कभी सहज नह हो पाते। राजा गाडन का राजकुमार वहाँ बखरे बगर के प ल को देख चीख़ रहा था। स चन को गाड कार को बेकार बताने लगा। देश के कसान को याद करता आ, अपने घोड़े क र तार को पयावरण के लहाज़ से सव म बताने लगा। मालवीयनगर क महबूबा इसे क चरल

ड़फरस बताकर मुँह फेर बैठ ।

राजा गाडन का राजकुमार घबराहट म लो हया क कताब पढ़ने लगा। मालवीयनगर क महबूबा वेटल और शूमाकर के ख़ुमार म खो गई। गहरी साँस छोड़कर कहने लगी, इं डया हैज अराइ ड। राजा गाडन हैज नॉट। वी कांट मीट। आई लव ां ी नोएडा।

क थई रंग क ब द और चौड़े गो डन पार क लैक साड़ी म तुम टाइ ड लगने लगी हो। जूड़े को आर-पार करती एक प सल और सगरेट का धुआँ, लगता है क तुम नह कोई और है। तो, मुझे अ छा लगता है ऐसे सजना। मने ये कब कहा? बस, जब भी इं डया इंटरनेशनल सटर म तुमको ऐसे देखता ँ, लगता है क तुम द ली हाट से नकलकर यहाँ प ँची हो।

उ फ़, बेकार म तुम सुधीर म ा क 'हज़ार वा हश'ऐसी टाइप कमट कर रहे हो। पता नह , ऐसे लबास म भर दए गए लोग मुझे बनावट लगने लगे ह। ब द करो बकवास। फ़ेसबुक पर टेटस लखकर तुम जो चेतना फैलाने नकले हो वह भी

कसी क नक़ल है।

कौन है ओ रजनल यहाँ। यह जो मेरे तु हारे बीच ेम है, वह न जाने इससे पहले कतने लाख के बीच घट चुका है...

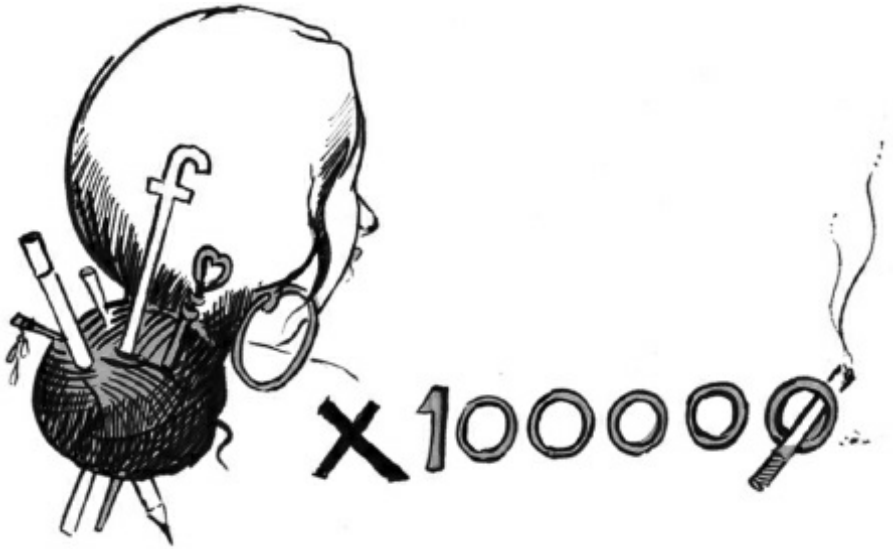

जी बनान द दास के बंगाल से कब का आगे जा चुका है बंगाल। पूजा पंडाल के बाहर बरयानी, डो मनोज़, मटन चॉप और फुचका क ख़ु शयाँ बची ई ह तो इस लए क सबने ख़ुद को बलबोड क तरह सजा लया है। ख़ूबसूरत लड़ कयाँ और बेस भालो छेले। उ सव क सामू हकता म ढाक कनारे य दखता है? ख़ुद को ऋ षदास कहनेवाले—इ ह पता है क ये अनुसू चत जा त के ह, मगर यह नह मालूम क आर ण

ज़ दगी बदल सकता है।

अरे, छोड़ यार! तुम कहाँ से सवाल के च मे से उ सव को देखने लगे। देखो म कैसी लग रही ँ?

हाँ, तुम चाँद से भी ख़ूबसूरत और बंगाल से भी सु दर। मज़ाक मत उड़ाओ मेरा। यह य नह दखता क सबके बावजूद बाऊल क धुन बची रह गई है और बचा रह गया है रबी संगीत। वना तुम मुझे कैसे मलते, गर म पूजो म डांस नह कर रही होती और तुम सामने बैठे मुझे देख नह रहे होते। होलूद चापार फूल..एने दे एने दे...

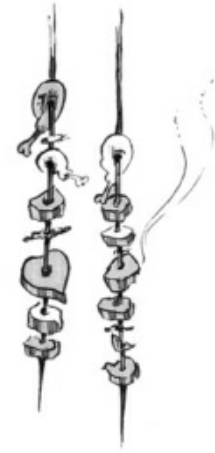

सी- फश क तलब दोन को आईएनए माकट ले गई। प सर बाइक कोने म लगाकर हे मेट बग़ल म दाबे बाज़ार म घुसे। मछलीवाला समझ गया। कूकरी बुक पढ़कर कोई आया है। यही बात अखर गई। जान-बूझकर अं ेज़ी बोलने लगी और वह हे मेट नीचे रखकर मछली क गदन पलटने लगा। अपनी गदन घुमाई तो माकट म मेम साहब क टोली झमाझम चली आ रही थी। ओ, तभी तुम इं लश बोलने लगी। औकात क हर लड़ाई का ह थयार अं ेज़ी थोड़े न है!

चल... डयर!

एक बात क ँ। तु हारी बाइक से ज़ोरबाग़ से गुज़रती ँ तो लगता है क हमारे सपन के बीज यह कह बखरे पड़े ह जो बाद म बड़े होकर मकान म त द ल हो जाएँगे। सामने लोधी गाडन। थोड़ी र पर ख़ान माकट...

देखो, अपने राजौरी गाडन म या कमी है!

नह रहनेवाली तु हारे साथ द ली के बुल दशहर म। ड ट फोरगेट ये सपना तुमने

दखाया था। डा लग हमारा भी ऐसा घर होगा...

.. ...

कुछ तो ीम कर यारऽऽ...

सुनो, या तुम साउथ द ली म मकान नह ले सकते? य ?

एम. लॉक माकट कतना हैप नग लगता है।

नह !

हॉट नह यार! ब त नगे टव हो गए हो। सारे ड्स साउथ द ली म ह। और हम ह क

राजौरी गाडन म बसने जा रहे ह। तो या आ? यार और लेस का रलेशन नह होता। होता है। साउथ द ली अपना-सा लगता है। जैसा मुझे बनना है वैसा लगता है। काश इस देश म एक ही दशा होती —द ण!

हॉ अट ए नाइस पोएम— सबसे ख़तरनाक होता है, हमारे सपन का मर जाना... ड् स कालोनी के पेबल ट म बीयर पीते व त उसने यह सवाल उछाल दया — ह द पोए पोपुलर य नह है? व म सेठ और चेतन भगत क ख़ूबी बखानने लगी। तुम इं लश म य नह लखते?

आती है पर उतनी नह ।

कम ऑन। यू कैन राइट। अगर तुमने पाश वाली लाइन इं लश म लखी होती तो बुकर

मल जाता।

उसने कोसा तो नह था मगर वह अपने आप को कोसने लगा।

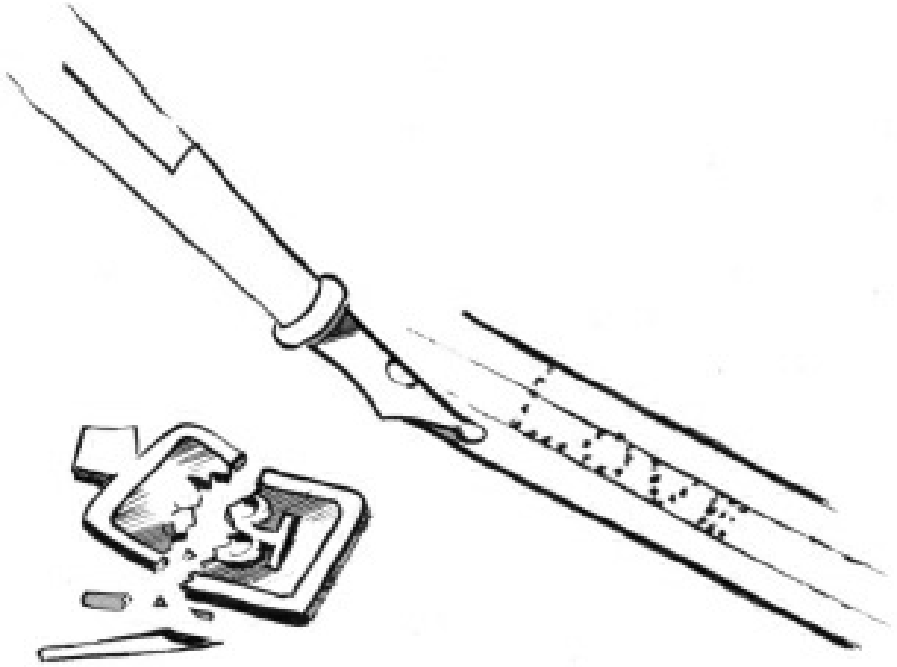

केरल से दिल्ली के सराय जुलैना—जाट के गाँव में ए कॉट्स, होली फैमली और अपोलो में काम करनेवाली नर्सों की नगरी बस गई।

किराए के कमरे के साथ-साथ उसके सपने बदलते रहे। दिल्ली के मरीज़ों का ख्याल करते-

करते उसका दिल उस पुराने मकान मालिक के बेटे में अटका रहा। सराय जुलैना से वह इतना प्यार करने लगी कि एक ढाबा ही खोल लिया—मालाबार होटल। इंतज़ार का सिरा रीता भी नहीं था।

इसी एक दन उसे अपनी ख़ूबसूरती से मु मल जाती। इस एक चेहरे ने उसे लाख नज़र का भगोड़ा बना दया था। उसके चेहरे से तप कर उठती हथे लयाँ हाँफने लगत और वह गुलाल क तरह उड़ने लगती। ेटर कैलाश म पैदा होना, चमड़ी का रंग ख़ास होना, सुन-सुन कर तंग आ चुक थी।

मेरे रंग और प से इतनी ही मोह बत है तो इसे कई रंग के नीचे ढँक दो—उसक बात सुन वह चुपचाप खड़ा रहा...

पं डारा रोड पर चाट खाने के बाद वह अ सर ख़ान माकट म शावमा खाने क ज़द करने लगती। चूड़ा-दही और भात-अचार खानेवाला उसके साथ साइड वॉक म बैठकर ॉन खाने लगा। डफ़स कॉलोनी के वागत रे तराँ म पहली बार उसने चेट् ट नाड

चकेन खाया तो द वाना हो उठा। लेडीज सीट पर बैठने क झप से नबटने क ताक़त

आ गई। अब वह अपने क धे को उसके सर के नीचे से नह हटाता था...

पैकेट को दाँत से काट दया। वह शवा पर ध चढ़ाने लगी। उसके टैग के धूप-च मे म ल वाइस का लू जी स और ोकोडाइल का हाइट ट शट। साउथ ए स से ख़रीद कर दोन ब त खुश थे। पचासी फ़ट क शवमू त के नीचे उसने मदर डेयरी के घूरता आ अघोरी दख गया। ग़ से म ना रयल ऐसे फोड़ा क वह ह के से चीख़ उठ । उ स...इ नोर न! चुअल होने आए ह, वायलट नह । शवा वल टेक केयर ऑफ़ हम।

मगध एस ेस, बोगी न बर एस-वन। द ली से पटना लौटते व त उसके हाथ म बनाड शॉ देखकर वहाँ से कट लया। लगा क इं लश झाड़ेगी। सरी बो गय म घूम-घूमकर ेमचंद पढ़नेवाली ढूँढ़ने लगा। पटना से आते व त तो कई लड़ कय के हाथ म गृहशोभा तक दखा था। सोचते-सोचते बेचारा कनल रंजीत पढ़ने लगा।

लफुआ लोग का ल वेज ॉ लम अलग होता है!

श हर म एक लाइओवर भी नह बना और तुमने ताँत क साड़ी अभी से छोड़ द ? और तुम बाघ छाप कुता अभी तक पहन रहे हो। कोलकाता क पीली टै सी क तरह। लोग ने कब से बोलेरो और सूमो म घूमना शु कर दया है। हाँ जानता ँ...कल मोनाली मली थी, मा नकतला पंडाल म। ग़ज़ब ख़ूबसूरत! अ छा मुझे ताँत म लपेटा जा रहा है और मोनाली ग़ज़ब! चाहने और देखने का फ़क़ वह से पैदा होता है जहाँ तु हारे दमाग़ म लड़ कय को देखने का बटन है। चले जाते न मोनाली के साथ! ै फ़क जाम म फँसी कार और कार के भीतर दोन का झगड़ा। तभी सड़क कनारे के पंडाल से कुछ लड़के नाचने लगते ह... जूली...जूली...जॉनी का दल तुझपे आया जूली...तू ही तो मेरी जान है...जान है...

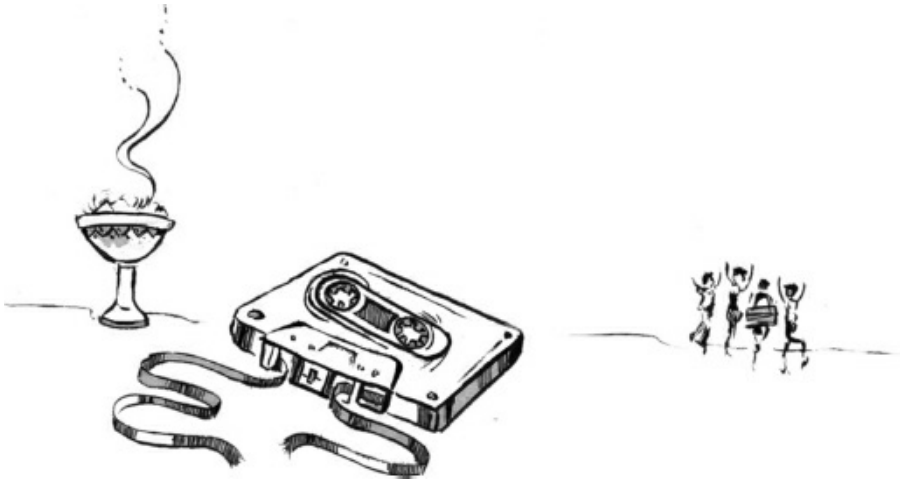

ये ज़द बाइक का जुनून कुछ ऐसा था क प सर पर बैठते ही वह र त अ नहो ी क तरह उड़ने लगी और वह कमल हसन क तरह उड़ाने लगा। सपने म पुरानी फ़ म का रे ो जा चल गया। कमला नेह कालेज के बाहर क कान पर घंट खड़ा रहने लगा। वहाँ से नकलती लड़ कय ने 'एक जे के लए' देखी ही नह थी। उनका वासु

कान पर उधार चलाने लगा। कसी के इ तज़ार म क़ज़ म डूबता चला गया...

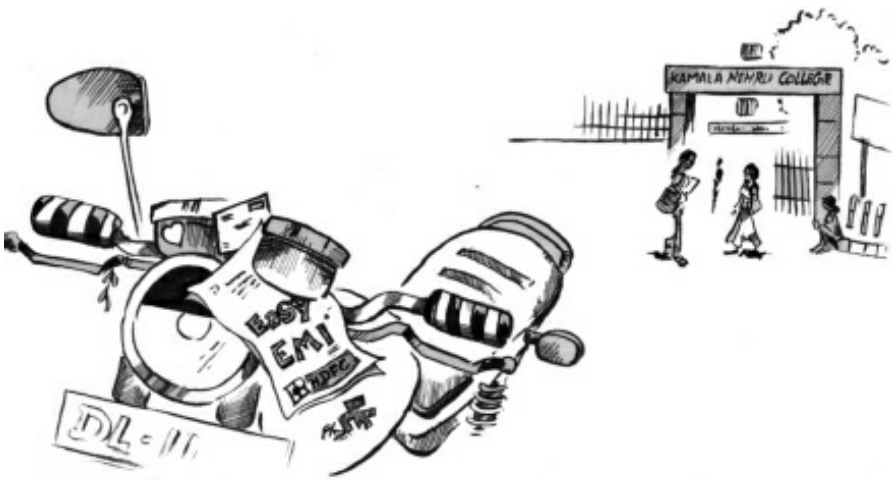

खाप कह आसपास

य ह नीले कोटवाला कताब को छाती से लगाए य खड़ा है? इ क़ के लाजवाब ण म ऐसे सवाल म उलझ जाना उसक फ़तरत रही है। इस लए वह चुप रहा। उसके बाल म उँग लय को उलझाने लगा। बेचैन होती साँस जा त वहीन समाज बनाने क अंबेडकर क बात से गुज़रने लग —देखना यही कताब हम हमेशा के लए मला देगी!

ये जो दो आँख ह उनसे कतना कुछ देख सकते ह न! हाँ, ब त कुछ।

ल मणपुर बाथे म भी आँख का एक जोड़ा सबकुछ देख रहा है। कब से गने जा रहा है

क कतन ने देखकर फर नह देखा।

उ फ़, तु हारा मन भी न फ़ेसबुक का टेटस हो गया है। म तु हारी आँख से द ली देखना चाहता ँ और तुम हो क... हाँ, म ँ क चादर हटाकर गद् दे क क पनी का नाम पढ़ रही ँ...

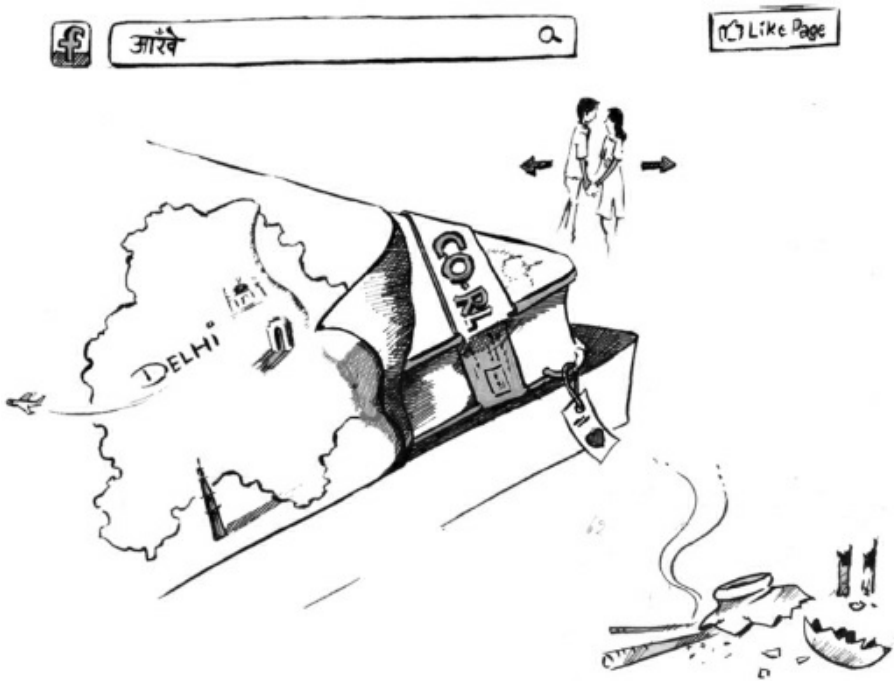

रा जा गाडन का राजकुमार ख़त लखने लगा। मालवीयनगर क महबूबा के नाम नह , शहर कोतवाल को—हा कम से हाई है क शहर म मोह बत मु तवी कर द। रायसीना ह स के घुड़सवार ने आ शक़ क छ व ख़राब करने के लए हर पेड़ के नीचे मो बल ऑयल डाल दया है। शाम को घर प ँचनेवाले आ शक़ क पहचान मो बल से होने लगी। इस ख़बर के यूज़ चैनल पर उड़ते ही आ शक़ क नया म तूफ़ान मच गया। वज़ीर अपनी चाल चल कर बरेली जा प ँचा। वहाँ से बयान आया क सभी अपना काम कर।

मालवीय नगर क महबूबा बग बॉस के सेट से उठाकर अ पताल म पटक द गई थी। शहर कोतवाल के लए आज का दन अ छा था। बना मामला दज कए, मजनु ने इक़रार कर लया था। नभाने के लए नह , तोड़ने के लए...

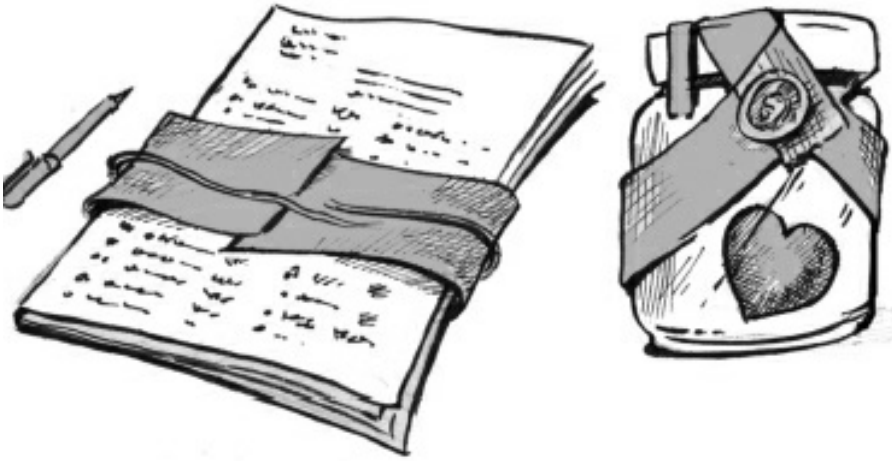

जतर-म तर पर नारे लगाते ए दोन क़रीब होने लगे। लगा क ेम को ज़ दगी का मक़सद मल गया। अपने माँ-बाप के आतंक से त दोन झूमने लगे। तीन दन बाद जब उस भीड़ म अपने म डल लास माँ-बाप को देखा तो दोन भाग लये। वह अब अ ा को ग रयाने लगी। इं डया गेट पर आइस म खाते ही कं चज करने का

फतूर ज द घर प ँचने क रणनी त म बदल गया।

दोन को मालूम था ख़ानदान के लोग नवरा को छोड़ बाक कभी म दर क तरफ़ नह जाते। इस लए वह रोज़ सुबह रो हणी से छ रपुर आ जाती। वह गुड़गाँव से आ जाता। यहाँ क गुफा म चलते-चलते एक सरे के लए म त माँगते दोन अपनी चाहत को वामख़ाह भ म बदलने लगे। अँधेरी गुफा के मोड़ पर वह ठहरने का नाटक करता, वह डरने का। पश उस आशीवाद क तरह होता जसक कामना म वे म दर म भटकते...

इं डया गेट के पेड़ भी हरजाई ह। छाँव के नीचे पीठ जलाते ह। 44.1 ड ी से सयस तापमान है।

अब हमने कहाँ तय कया था क मौसम के हसाब से मोह बत का लान बदला करगे!

पट् टे के नीचे तु हारा सर तो महफ़ूज़ ही है, हमारा ही सर क़लम हो रहा है।

बंटा-ठंडा सब बेअसर। भाग चलो इं डया गेट से। कल के अख़बार म हमारी ही त वीर छपेगी। देखो ढूँढ़ रहे ह तपते युवक-युव तय को, वह देखो ट वी वाला। चलो आउट ऑफ़ फ़ोकस हो जाते ह...

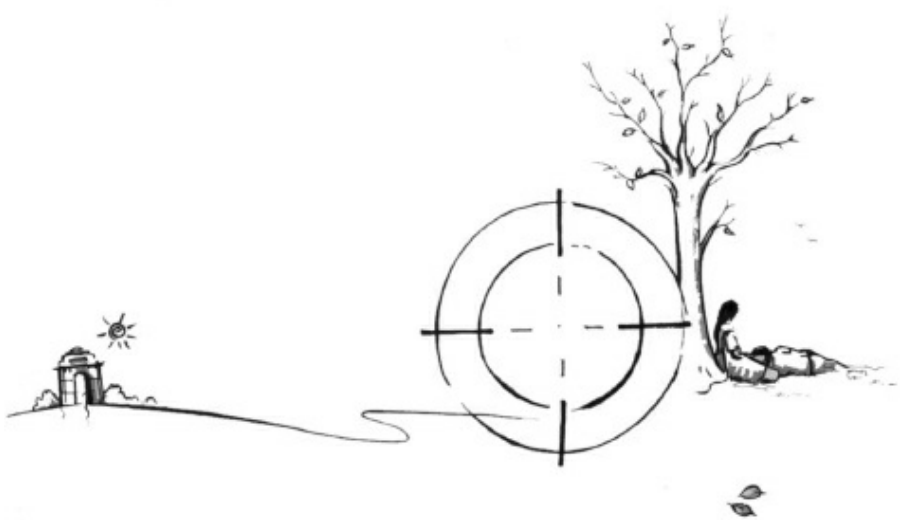

काश, ओबामा जैसा कोई मु खया हमारे ज़ले म होता। सारे खाप को एक रात म ख़ म कर देता।

हाँ, सोचकर तो यह वाब सुहाना लगता है। मगर याद रखना ब क़ हाथ म आते ही ओबामा भी आतंकवाद जैसी ही बात करता है। तब कहाँ तक भागोगी! सुना है, रात के अँधेरे म भी वह देख लेता है?

चलो न, कल सुबह से डेमो े सी के लए कुछ करते ह। आम और पीपल के नीचे कब तक छपते रहगे हम? जामुन भी गरता है तो लगता है कसी खाप क गोली लग रही है...

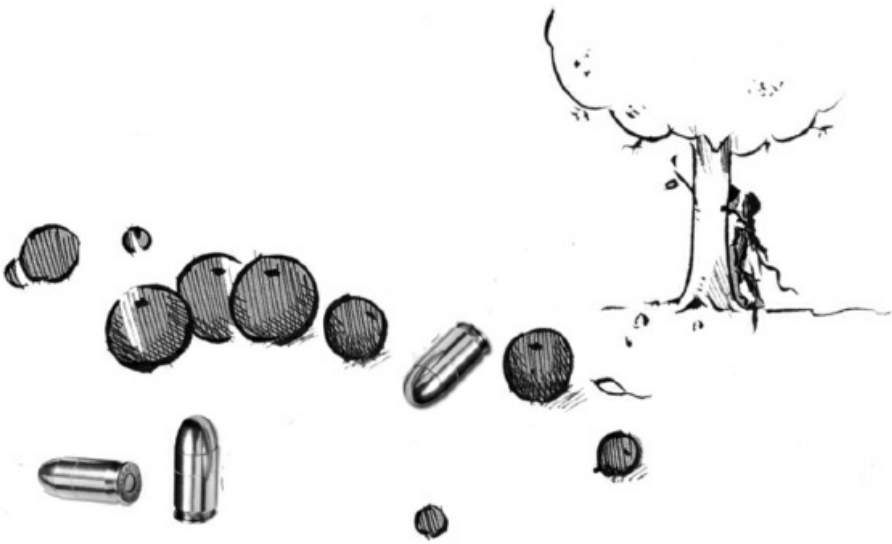

पहली बार दोन अ वाल वीट् स म मले। इस लए वह उसे कभी डोडा तो कभी गुलाब जामुन बुलाने लगी। लाल रंग के इस बोड को दोन ने अपने इ क़ का नेम लेट बना

लया। खाप वाल ने शहर के तमाम अ वाल वीट् स पर पहरा बठा दया। दोन सु दर

नगर के न थू वीट् स कानर म मलने लगे। उसने उसे मठाइय के नाम से बुलाना छोड़

दया। पूछने पर बस यही कहा, वह जगह अपनी थी। यह जगह अजनबी है। अब तु हारा

नाम ही भरोसा है।

ऐ बेला, तुम तृणमूल क हो गई, पा लो क नह ई...पाड़ा का यार पा टय क भट चढ़ गया। हम दोन के बीच गुड़ का संदेश कुछ तो बाक़ होगा! द खनापन के इ पो रयम से साड़ी का वादा उधार क तरह है मेरे पास। या हम लौटाने के लए भी कभी न मलगे? द द के डर से हम फ़ेसबुक पर चैट नह कर सकते, तुम बुक म मा नकतला तो आ सकती हो न! सं ास बदा त नह होता बेला —तु हारा पा लो को ब, पा लो...

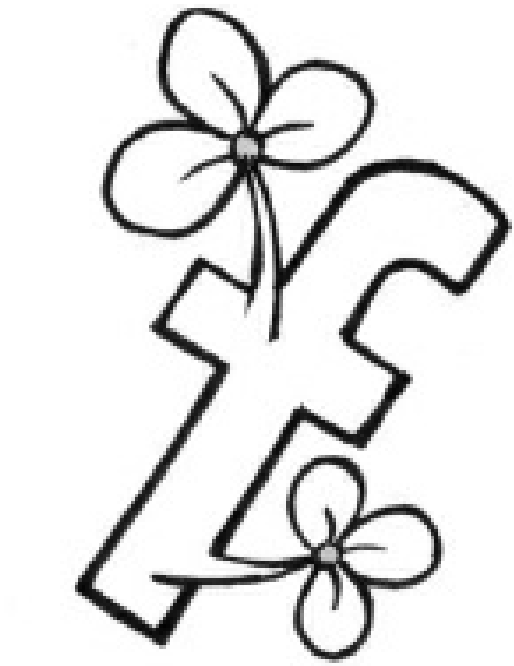

लगाता है और ईमेल भी करता है! र लाई न आने पर पा लो ईमेल पर ईमेल भेज रहा मा ट फ़ोन पर आधी रात पा लो का ईमेल आ गया। बेला थरथराने लगी। पागल है! कोबी तो आ नह , ने दा के नाम पर मरवा देगा। तृणमूल के वकर से दल था। बेला इनबा स से ड लट करती, फर ड लट बा स से ड लट करती। तभी साइबेर

सेल से ब सास का फ़ोन आने लगा। बेला काँपने लगी। सा ट लेक के पेड़ पर च ड़य ने शोर मचा द । बेला घर से नकल भागने लगी। माट फ़ोन बजता रहा। पा लो का नाम

लैश होने लगा।

तू पागल है पा लो। ईमेल य भेजा?

तू भाग य रही है बेला?

म माट फ़ोन को सा ट लेक म फकने जा रही ँ। ईमेल पकड़ ली गई तो! बेला...तुमी जानो न... ईमेल छोड़कर कोई नह भाग सकता। ईमेल से कोई नह भाग सकता।

तो पा लो तुई भाग न...

यो पा लो, अ म नया क बरयानी क तरह तु हारी याद आती है। मने सयासत और इ क़ के इ तहान म सयासत चुन लया है। बरयानी क जब भी महक आती

है, पा लो तू याद तो आता है मगर च तीस साल के बाम-सं ास क याद म म द द -सी हो जाती ँ। बदल क पो ल ट स, अदल-बदल से नह हो सकती। पा लो हमारा यार पंजाबी ढाबा के चकन भत क तरह हो गया है। तू याद तो आता है ले कन साइबर सेल का ब सास साये क तरह पीछा करता है। हम पाट तो नह बदल सकते, यार भी नह बदल सकते? मुड़ी भाजा-सी हालत हो गई है मेरी। पा लो, तू यार चाहता है या पाट ? म तुझसे नह , ख़ुद से पूछ रही ँ। या चाहती ँ? यार या पाट ?

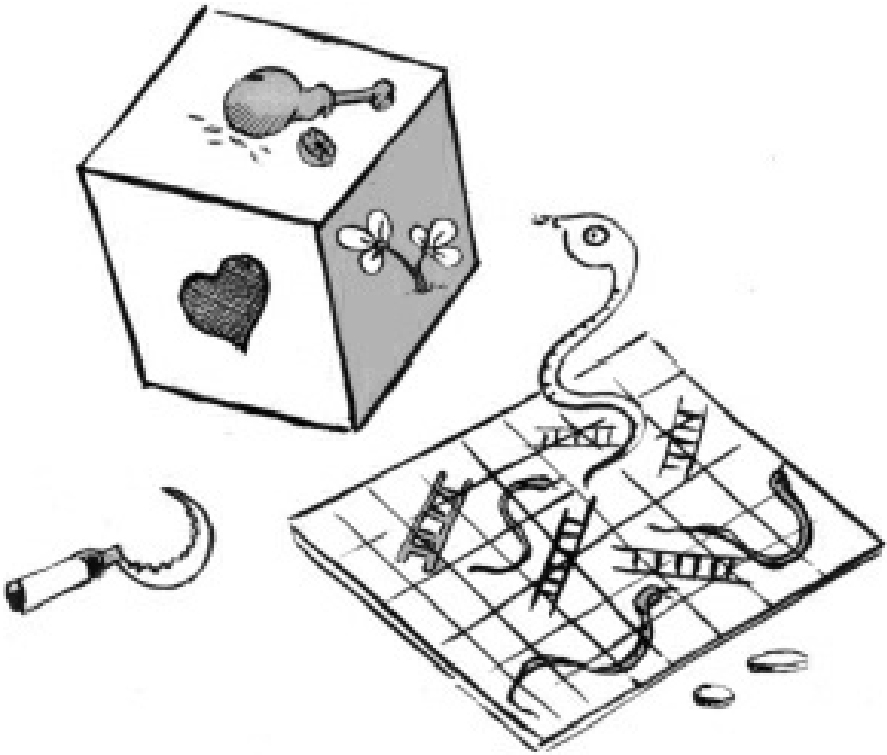

ज़ोर लगा के,

ज़ दगी!

बात तो पूरी हो गई थी, अधूरी रह जाने का बहाना था। पता है, रै लय से उड़ती धूल से कभी आँधी का डर नह लगता। सही कहती हो तुम। हम तो उस धूल के छँटते ही रामलीला मैदान म बखरे पच क तरह इधर से उधर होते रह जाएँगे।

तो अब हम कहाँ मलगे? तुम बताओगे या म पता क ँ ... कर लो, ले कन रामलीला जैसा कोई मैदान मल जाए वही ठ क रहेगा।

य ? यार, ेक म कुछ पो ल ट स जमती है अपने को।

म पूछती ँ, हम ेम म ह या पो ल ट स म?

कह नह ह हम।

तो?

हम द ली म ह, सनम। कह मल, या फ़क़ पड़ता है!

ह म एक साफ़ समय म रह रहे ह। जो साफ़ होने से पहले ही साफ़ हो चुका है। साफ़-साफ़ कहो न, या कहना चाहते हो... दरअसल कहना कोई सफ़ाई नह क साफ़-साफ़ कह ँ। तो कहना या है, यही बता दो।

कहा तो क न कहना ही सफ़ाई है।

तो कहना या है जानू?

वह ये क हम कचरा फैलाने को 'कहना' कहते ह। इ क़ म ख़ामोशी के दो पल भी साफ़ हो गए तो बचेगा या? सफ़ाई या कचरा...

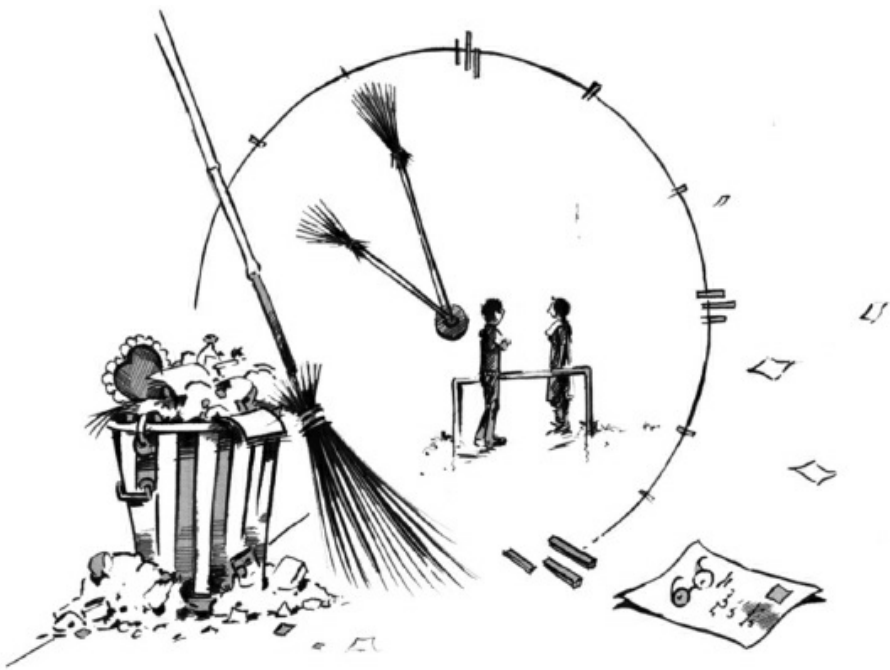

सौ फ़ सद सच। तु हारी क़सम। पर सच तो सच होता है! छ बीस या चौह र फ़ सद या होता है? और ये तुम

तशत म य बात करते हो?

या हमारा यार सौ फ़ सद नह है?

पर जब से सच म व नवेश क सीमा बढ़ाई गई है, मेरा यार मेरा नह रहा।

या?

हाँ। हम सब व नवे शत हो चुके ह।

स य अगर सौ फ़ सद नह है तो वह स य नह है। स य और यार सफ़ तु हारे लए नह है। सीमा और ग त के लए भी है।

सुनो।

कहो।

तुम पागल हो गए हो। तुम फ़ेसबुक ब द कर दो। हम बना व नवेश के वाब देख लगे। ले कन म तो जीने क बात कर रहा था...

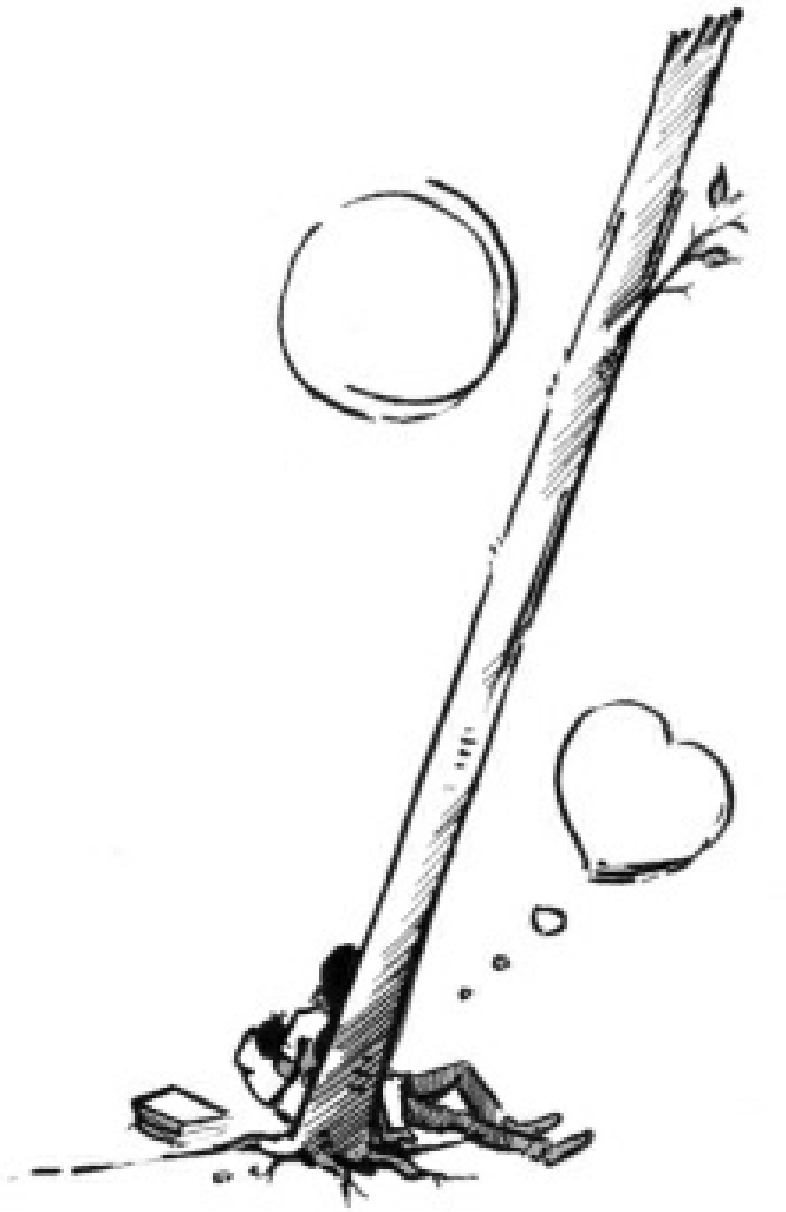

पता है तुम दन-भर म बीस तशत ख़ुश रहती हो और बारह तशत उदास। दस तशत तु हारा मूड नन आफ़ द अबव रहता है। मुझे लेकर आठ तशत तो 'नोटा' रहता ही रहता है। डा लग तुम मुझे देख रहे हो या चैनल का सव। ओ मेरे झेल सनम...या तो ट वी देख लो या फर चाँद...

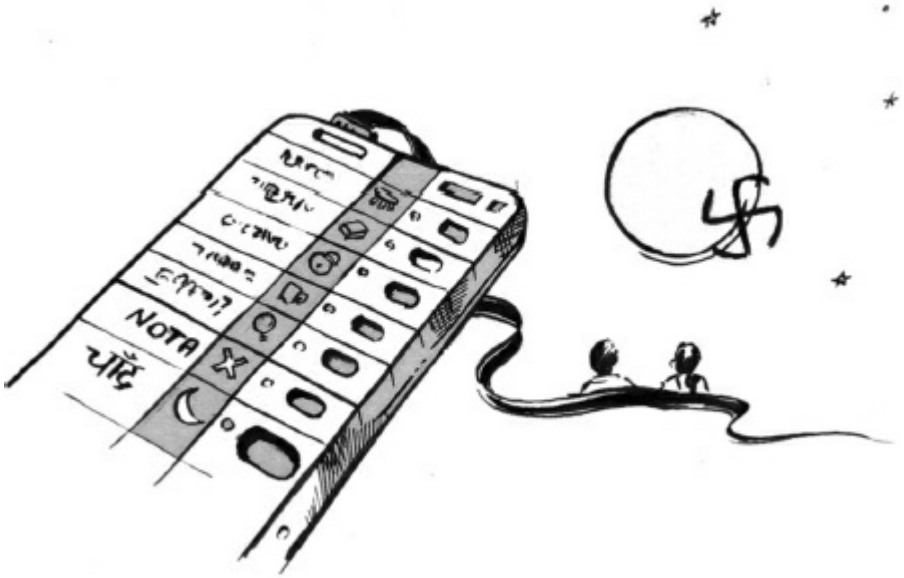

ता लय क गड़गड़ाहट म फक ँ। म शेल, तुम तो जानती हो न इस जीत को! हमने ता लय का इ तज़ाम कया है अपने इस एका त के लए। य न म तु ह बाँह म भर लूँ और उसक एक त वीर उन हाँ ओबामा, अवाम का मु तक़ बल कौन बदल पाया है, कम-से-कम अवाम ने हमारी तक़द र बदल द । पता नह हम कब ठ क थे, जब अवाम थे तब या अब जब मरान हो गए ह हम।

हाँ मशेल, तुम ठ क कहती हो। हमारी जीत का ज सफ़ हमारा है। बाक़ तो नाचने आए ह। नाचने दो न उ ह! एक त वीर क ही तो बात है। तुम मेरी बाँह म और म तु हारी।

या-याऽ ओबामा, अमे रका का लोकतं सफ़ एक अ छ त वीर है जैसे त वीर हमारी-तु हारी।

ह म, ये ल ेक लखनेवाला जानता तो नह है न!

या?

क हमारा यार सफ़ एक त वीर है...

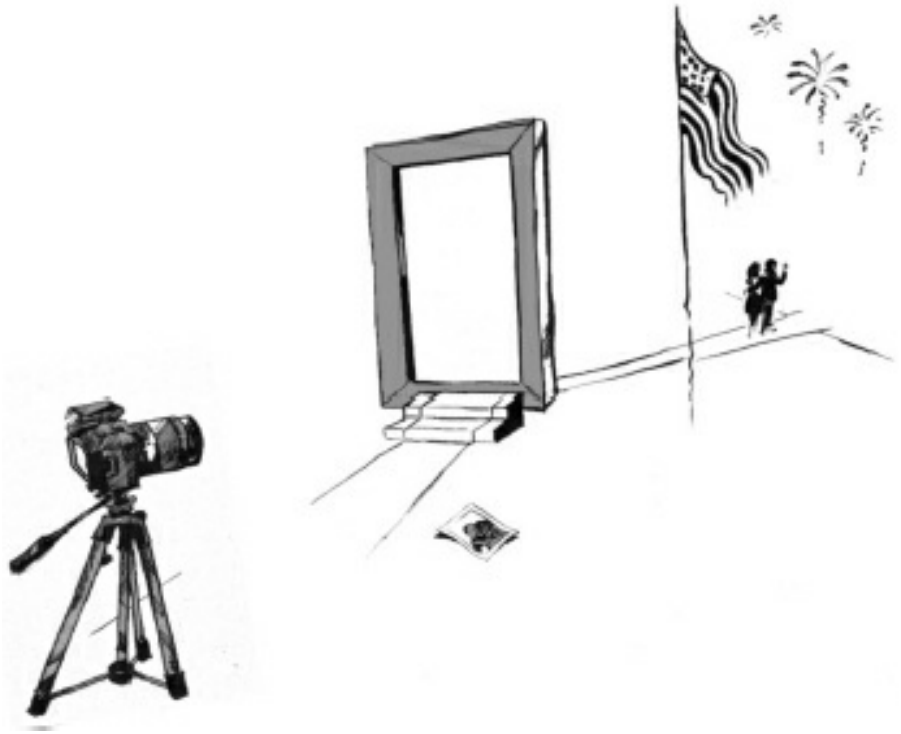

से टर फ़ोर माकट का चौराहा तमाम झूठे वाद के उतारने-चढ़ने का गवाह रहा है। हम भी एक दन यह कसी हो डग म टाँग दए जाएँगे। वैशाली अपनी नगरवधू का इंतज़ार नह करती। आ पाली नाम क इमारत बनानेवाले ने ॉपट के सौदे म ख़ूब बनाए। नगरवधू अपने शहर को क धे पे लादे उस वैशाली से इस वैशाली आ गई। वह अब कॉरपोरेशन के चुनाव म ब बू सह क वधू बनकर वोट माँग रही है। और तुम या कर रहे हो?

म तो दज कर रहा ँ।

हमारे सपने?

नह , जजर वैशाली को।

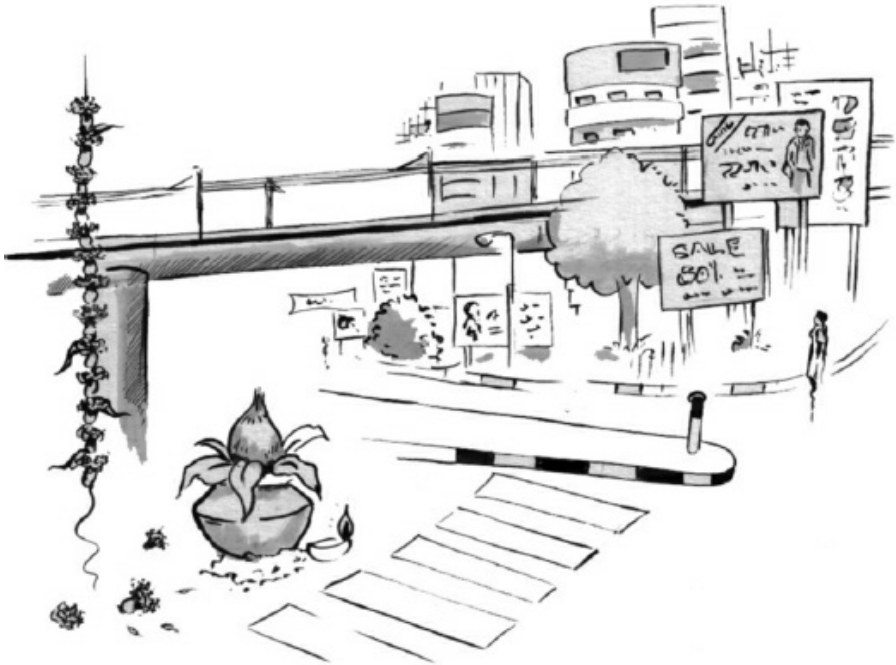

सु नो, तुमने जेलचलो डॉट कॉम म र ज टर कर लया या? सुना था जब दादा जी गा ही बाबा के कहने पर जेल म ठेला गए थे। याऽ...मेरे भी डैड के ड् स जेपी के साथ ज़न गए थे। ओ रयली! गॉड क़सम, नो याऽ...माई डैड वाज़ इ दरा भ । अ चुअली ही लाइ ड अमरजसी। ही वाज़ अग ट लालू ाम द बग नग।

ओह, दैड वे।

बट दस टाइम लेट् स गो टुगेदर। जेलचलो डॉट कॉम इज़ कूल न! या-याऽ वैरी कूल। देन माइ डूड चलो, चलते ह जेल। अ ा ने हम डॉट कॉम पे चलना सखाया, अब हम मु क ओ कॉम क ख़ा तर जेल चलगे।

सुनो...तुम साथ तो दोगी न...आइ मन... डच...

उ फ़...कैसी बात करते हो...ऑफ़कोस जेल चलूँगी। वी आर टूगेदर फ़ार एवर...

प क ख़ामोशी से ये हवा भी डबेट करती है न! चुप रहो। दमाग़ म तु हारे एंक रग का भूसा भर गया है। हवा भी डबेट कर रही है!

ँ! ग़ सा य करती हो! बात पूरी करने दो या म ेक ले लूँ। ेक म ही मेरे सवाल ल स

और ल रल से नहाने चले जाते ह और जब लौटते ह तो डोरा ब नयान पहनकर। उ फ़, यह एंकर आ शक़-आवारा हो गया है! सुनो, तुम ट वी नह छोड़ सकते? नह , ये साँस क बीमारी है। यही छोड़कर जाएगी मुझे, म नह । चुप, मन स!

उ लझा आ लगता है यह सत बर! अ ू बर के आने क बेक़रारी या फर अग त क बरसात से बछड़ने का ग़म। हवा म अजीब-सी गुनगुनाहट थी या महँगाई या ाचार पर सरकार क बेबसी। मले नयम पाक म पाम के नीचे बैठे दोन घास ही नोचते रहे। ताली थपथपाकर वह आशीष देता रहा मगर फर दोन के चेहरे पर मु कुराहट नह आई। बादामवाला भी हाँक लगाकर चला गया। कूड़ा उठानेवाले ब चे ने दोन को यान से देखा और सोचा, अजीब से ेमी ह। बात भी नह करते और घास को भी नह छोड़ते। ऐसे ही

ेमय से यह बाग़ भरा रहा तो माली क नौकरी गई पानी म!

दो न के ह ठ चॉकोबार से चपके ए थे। आधे-आधे ह से को बाँटकर चाटते रहने का सुख आज भरी भीड़ म मल रहा था तो इसक वजह अ ा थे। अनशन तोड़ने के ऐलान के साथ जब भीड़ छँटने लगी तो दोन का एका त भी ख़ म हो गया। काश अनशन एक ह ता और खच जाता।

उदास मन से दोन जब बाराख भा लौटे तो एक बार मुड़कर रामलीला को देखने लगे। जीभर कर देख लो, इसी भीड़ के अँधेरे म हमने आ दोलन के च द ल हे गुज़ारे ह। म तो इं डया के लए कुछ भी कर सकती ँ, पर पता नह अब कब अनशन होगा...

थ कान क आँख डूबते सूरज क तरह लाल होती ह और पाँव ल बे सफ़र से लौटने के बाद क तरह खते ए। जमी-जमाई नौकरी ने घर-द तर के अलावा कोई रा ता ही नह दखाया। अ ा को देखने ही सही, दोन पहली बार रामलीला मैदान म चलते रहे। देर तक नारे लगाते रहे। दस साल

क नौकरी के बाद भीड़ से बचने के लए ही सही, जब दोन ने एक सरे का हाथ पकड़ा तो सबकुछ उस पहली बार जैसा लगा, जब दोन इसी मौक़े के लए देर तक सड़क पार करने से कतराते रहे। अचानक सामने आती तेज़ र तारवाली कार ने वह मौक़ा दे दया था।

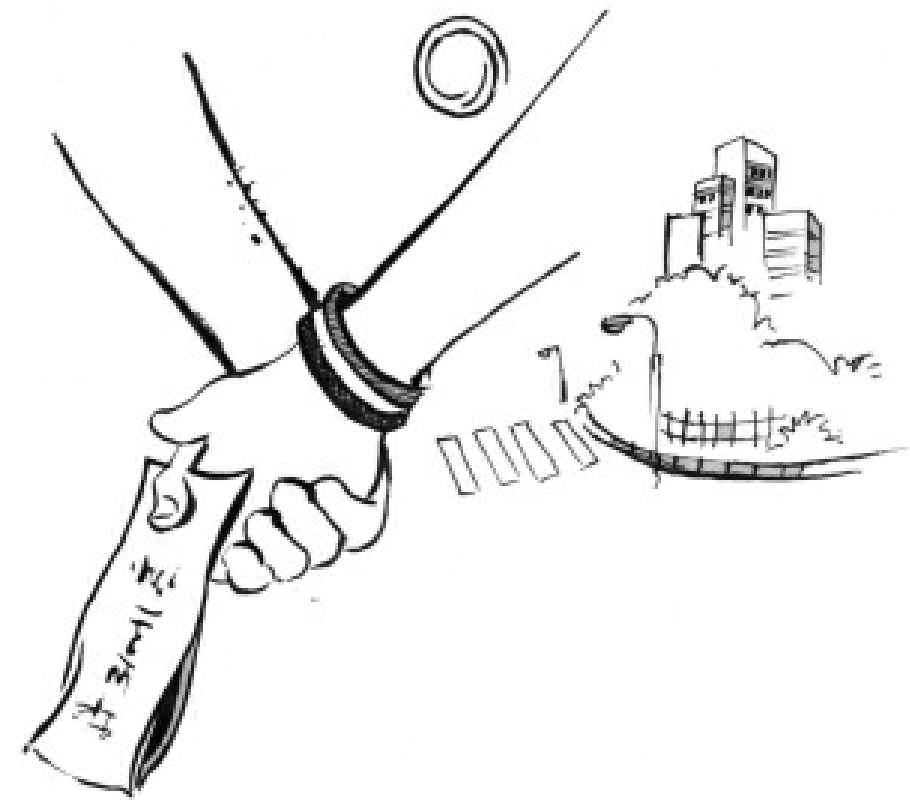

शा त पथ से गुज़रते ए मालूम नह सब कुछ भ -सा य लगने लगता है! मु नरका से 620 न बर क बस तीनमू त प ँचने से पहले कसी यूरोपीय ंग से गुज़रने लगती है। पीछे क वडो सीट पर टकराते हमारे क धे कसी शायर के मसरे से टकराने लगते ह। काश, हम छू पाते कभी उन तमाम ह के-ह के पश को। कंड टर क सीट से बेख़बर तुम कस गाने क धुन म खो जाती हो? कौन होता है तु हारे साथ ‘ सल सला’ के उस गाने म...

पता है, रात सपने म अ ा-गांधी दोन आ गए। कम ऑन, यार! तुम ब त पो ल टकल हो गए हो। रलै स। म य नह आई अभी तक सपने म? कभी सीताराम का लेख तो कभी संद प पांडे का। टॉप! देखो न, बोगेन व लया क ख़ूबसूरती। जेएनयू क हवा बगनी लगती है। 615 से जनपथ चल।

नह , मुझे ज तर-म तर नह जाना।

काश वष क र तार से दोन के सपने तमाम ह के च कर काटने लगे। तमाम तरह क ा तय को बीच म ही छोड़कर यार करने क जगह क तलाश ने उ ह बुजआ

तो बनाया ही, भगोड़ा भी बना दया। मे ो टेशन का नाम कालकाजी म दर कैसे हो सकता है, ऐसे सवाल पर ख़ून का खौलना ब द हो चुका था। छ रपुर टेशन आते ही उसने म दर क तरफ़ सर झुकाया और उसने अपने इ क तरफ़ देखा। छोटा-सा सफ़र

कतना ल बा हो गया!

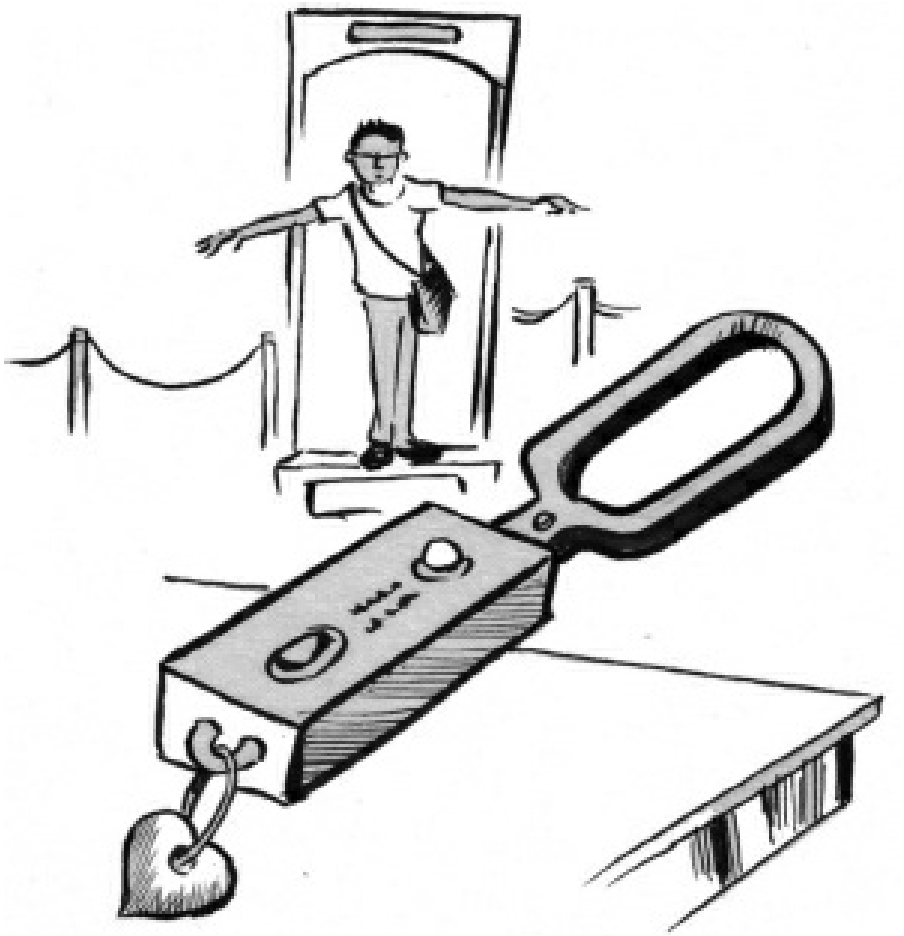

डा लग, अब ह ते म एक ही दन मलते ह। वैसे भी जगह क तलाश म भटककर तेल नकल गया है। इतनी गम म या करना है। थोड़ा समर ेक ले लेते ह। वैसे भी कल से पाँच पये महँगा हो गया है तेल। और हाँ, थोड़ा तुम भी घर से नकला करो। बस लेकर आईएसबीट तक तो आ जाओ।

अरे यार, तेल का दाम न बढ़ गया, तुम मेरा ही तेल नकाल रहे हो! नह आती। मत बोलना क मस कर रहा ँ...

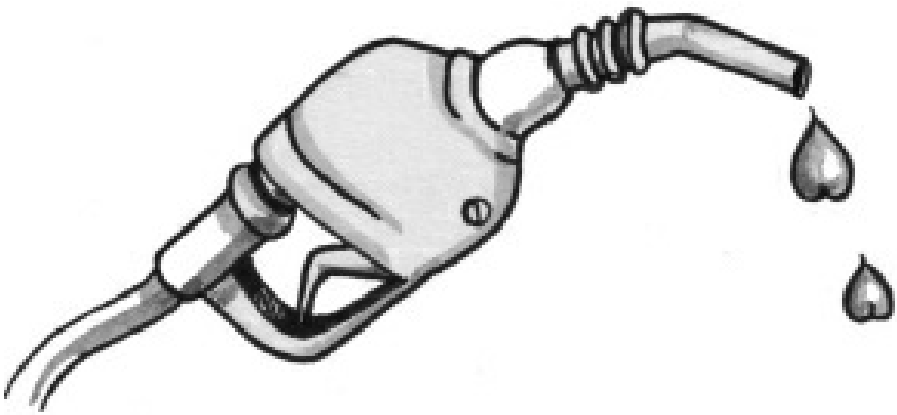

इस बार हम रामलीला नह जाएँगे। चौपाट जाएँगे। सम दर क लहर से टकराएँगे। थक जाएँगे तो आज़ाद मैदान म सु ताएँगे। इन उ -सी ल बी सड़क पर चलते चले जाएँगे। एमएमआरडीए मैदान म यारह लाख के कराए का च दा चुकाएँगे। अ ा-अ ा

च लाएँगे। जब शोर बढ़ता चला जाएगा, हम आई लव यू-आई लव यू च लाएँगे।

लोकपाल क जगह एक लवपाल बन जाए तो हम े मय का दन बन जाए। कतना अ छा होगा, तब हम मायूँ के मक़बरे के मैदान म एक सरे क गोद म सोने का बहाना नह करगे...

अब आपक बारी...

कुछ वष पहले ह द क स लेखक नमला जैन जी क एक कताब का रेखा च बनाने का मौक़ा

मला…उसम उ ह ने कहा था क ‘एक व त के बाद कोई भी शहर वहाँ के रहनेवाल के लए जीने का तरीक़ा हो जाता है, जस तरह हम शहर को बनाते ह, वैसे ही वह हम बनाने लग जाता है… और हम द ली वाले, आगरा वाले या मु बई वाले कहे जाने लगते ह। ‘इ क़ म शहर होना’ क कहा नय का च ांकन करते ए म इन बात को और गहराई से समझ पाया। पतझड़ म लोधी गाडन के माली उदास य रहते ह… सुनसान सड़क और ग लय म भी कई उ मीद क परव रश होती है… इन पं य को पढ़कर ऐसा लगा क ल ेक मेरे लए है। हर प े के साथ यह अहसास गहरे उतरता गया

क इस शहर को देखने के लए मुझे कसी और के च मे क ज़ रत नह है। यह रवीश

क लखावट क ख़ा सयत है क म कब इस कताब के च कार से इसका लेखक बन गया, पता ही नह चला।

मेरा यह यास कतना सफ़ल रहा यह तो पाठक ही बताएँगे, पर आभार रवीश का….उ ह ने मुझे वह आज़ाद द और अपनापन दया। कताब पर काम करने के दौरान उनके त मेरा स मान और भी बढ़ा है। कताब के व प, आकार और ावहा रकता को लेकर स यान द जी का ‘मछली क आँख वाला’ वाला मागदशन सराहनीय है। इसके साथ राजकमल काशन के ब ध नदेशक ी अशोक महे री का भी आभार, ज ह ने मुझे यह अवसर दया।

लोग का कसी कताब से जुड़ाव उस रचना क सफलता है। मने भी इस कताब के बनने के दौरान अपने ब त सारे कोने बनाए या कोने से जाले हटाएँ ह…अब आपक बारी…

व म नायक

18 जनवरी, 2015

नई द ली

सार्थक

फ़ेसबुक फ़िक्शन शृंखला में अगले लप्रेककार हैं

विनीत कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय के अम्बेडकर कॉलेज में मीडिया पढ़ाने वाले विनीत ब्लॉगिंग की दुनिया के बेहद लोकप्रिय नाम हैं। *तहलका* हिन्दी में मीडिया पर नियमित स्तम्भ-लेखन। रवीश कुमार के लप्रेक लेखन का सिलसिला शुरू करने के बाद जिन बहुत सारे युवाओं ने उस फॉर्मेट को अपनाया, उनमें विनीत अग्रणी। इनके लप्रेक का अपना अलग तेवर है। ये यूनिवर्सिटी कैम्पस से लेकर न्यूज़ चैनलों की अन्दरूनी दुनिया तक से अपने लप्रेक बुनने का सामान जुटाते हैं।

गिरीन्द्र नाथ झा

पाँच साल से भी ज़्यादा देश के प्रतिष्ठित न्यूज चैनलों में घटना को ख़बर की शक़्ल देने के बाद अब बिहार के अपने गाँव में नए ढंग-ढर्रे से खेती-किसानी और अपने ब्लॉग *अनुभव* पर लेखन। दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में ग्रेजुएट। वाईएमसीए से पत्रकारिता में डिप्लोमा। इसी कड़ी में सीएसडीएस-सराय की फैलोशिप पर प्रवासी इलाकों में टेलीफोन बूथ पर रिसर्च। लप्रेक लेखन में ग्रामीण भारत के रंग भरने वाले, फणीश्वरनाथ रेणु की भाषा की खुशबू भरनेवाले अद्‌भुत शैलीकार।

शृंखला की पहली किताब 'इश्क़ में शहर होना' के बारे में info@rajkamalprakashan.com या राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002 के पते पर अपने विचार भेजें और अगली किताब पर आकर्षक छूट पाएँ!